जोहार

ई–पत्रिका

सितम्बर – 2025

तृतीय अंक

हडको
hudco
A NAVRATNA CPSE

हडको क्षेत्रीय कार्यालय, राँची

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय राँची
को हिन्दी में विशिष्ट कार्य हेतु योगदान के लिए तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम)
द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय राँची को प्रदत्त तृतीय पुरस्कार

जोहार

hudco
A NAVRATNA CPSE

अनुक्रमणिका

संपादक:

श्री मधुकर डी. उगेमुगे

क्षेत्रीय प्रमुख

संपादक मंडल:

मो० आरिफ एनाम

वरिष्ठ प्रबंधक (सचिवीय/रा.भा.)

श्री अमरेन्द्र कुमार

उप प्रबंधक (परि.)

सह–संपादक:

श्री संजॉय मिश्रा

प्रबंधक (आई.टी.)

सहयोग:

हडको क्षेत्रीय कार्यालय, राँची के सभी कार्मिक एवं परिवारगण।

शीर्षक	पृष्ठ सं.
संदेश	i-iv
मेरी कलम से	v
झारखण्ड प्रदेश एक संक्षिप्त परिचय	1
झारखण्ड आंदोलन	2–4
झारखण्ड की कलाशिल्प	5–7
स्थानीय भाषा में रखे गये नामों में प्रकृति प्रेम की झलक	8
झारखण्ड के प्रमुख किले/ऐतिहासिक स्थल	9–10
झारखण्ड प्रदेश की प्रमुख जनजातियाँ	11
क्षेत्रीय कार्यालय राँची में राजभाषा हिन्दी में की जा रही प्रगति की स्थिति	12–15
ना तुम आए ना धूप	16
राँची स्थित मनोरम पर्यटन स्थल	17–20
जलवायु परिवर्तन: हमारे ग्रह के लिए एक बढ़ता हुआ खतरा	21–22
भारत मेरी माँ को पत्र–2047 मेरे सपनों का विकसित भारत	23–24
टी.बी. रोग उन्मूलन पर 100 दिवसीय सघन अभियान	25
स्वच्छता ही सेवा 2024	26–27
अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस, 2025	28
वार्षिक खेल दिवस 2024–2025 का आयोजन	29
हडको सीएसआर अंतर्गत झारखण्ड में किये गये कार्य	30–33
हडको का 55वां स्थापना दिवस	34
अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2025	35
सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2025	36
विश्व पर्यावरण दिवस	37
आजादी का अमृत महोत्सव के तहत ''हर घर तिरंगा'' 2025	37
हडको क्षेत्रीय कार्यालय, राँची के व्यापार संचालन का संचयी प्रदर्शन	38

इस पत्रिका में प्रस्तुत की गई लेखनी/रचनाकारों के अपने हैं। यह आवश्यक नहीं कि उनसे संपादक मंडल की सहमति हो।

संदेश

प्रिय साथियों,

यह जानकर मुझे हर्ष हो रहा है कि हडको क्षेत्रीय कार्यालय, राँची वार्षिक पत्रिका 'जोहार' का तृतीय अंक प्रकाशित करने जा रहा है। इस पत्रिका में क्षेत्रीय कार्यालय, राँची द्वारा वर्ष भर आयोजित की गयी विभिन्न गतिविधियों एवं प्रयासों पर विशेष रूप से प्रकाश डाला गया है। इस पत्रिका में झारखण्ड के प्राकृतिक वर्णन के साथ-साथ प्रकृति के विभिन्न सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं स्थानीय रंगों को बिखेरने का प्रयास किया गया है।

शब्द और भाषा, मानव के सम्प्रेषण का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। किसी राष्ट्र की एकता और अखंडता को बनाए रखने तथा सभी देशवासियों को एकता के सूत्र में बांधने में भाषा की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। भाषा के माध्यम से एक दूसरे के भावों को समझने में मदद मिलती है। हिन्दी हमारी राजभाषा है, इसे सशक्त, समृद्ध बनाना एवं प्रचार-प्रसार पर ध्यान देना हम सभी भारतवासियों का कर्तव्य होना चाहिए।

हडको, एक तकनीकी वित्तीय संस्थान है। जिसका उद्देश्य समाज के अत्यंत पिछड़े एवं निम्न आय वर्गों, वंचितों के लिए आवासीय सुविधा के साथ-साथ मूलभूत बुनियादी सुविधाओं को सभी सामाजिक वर्गों तक पहुँचाना है। जिसके लिए हडको हमेंशा से प्रयासरत एवं तत्पर है और अपने इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए निरंतर प्रयत्नशील है।

मैं उम्मीद करता हूँ कि राजभाषा हिन्दी प्रचार-प्रसार और इसके विस्तार को बढ़ाने और सम्पूर्ण वैश्विक पटल पर हिन्दी को स्थापित करने में हम सभी भारतीय निरंतर प्रयत्नशील रहते हुए अपने-अपने माध्यम से किए जा रहे प्रयासों द्वारा जरूर सफल होंगे।

शुभकामनाओं सहित,

संजय कुलश्रेष्ठ
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संदेश

क्षेत्रीय कार्यालय, राँची द्वारा वार्षिक गृह पत्रिका 'जोहार' का तृतीय अंक का प्रकाशन एक बड़ी उपलब्धि एवं अत्यंत सराहनीय प्रयास है। भारत सरकार द्वारा राजभाषा के प्रचार-प्रसार को बढ़ाने और पूरे देश में इसके प्रयोग को सफल बनाने का कार्य राजभाषा विभाग, भारत सरकार सौंपा गया है। इस कार्य के लिए हिन्दी राजभाषा विभाग निरंतर प्रयत्नशील है एवं समय-समय पर अपनी विभिन्न योजनाओं के माध्यम से राजभाषा हिन्दी के प्रयोग और प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देने में सहयोग प्रदान कर रही है। यह प्रयास तभी सफल हो पायेगा जब हम सभी भारतवासी पूरी निष्ठा और ईमानदारी से पूर्ण उत्साह के साथ हिन्दी भाषा को संवाद, संचार एवं पत्राचार का माध्यम बनायेंगे और संवाद करते समय हिन्दी भाषा का प्रयोग करने का गर्व अनुभव करेंगे।

राजभाषा हिन्दी को सामान्य बोल-चाल की भाषा के साथ-साथ कामकाजी भाषा के रूप में स्थापित करने के लिए हमें हिन्दी के प्रति आदर का भाव रखना चाहिए और सरकारी काम-काज हिन्दी में करना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। मुझे विश्वास है कि राँची क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा प्रकाशित की जा रही वार्षिक गृह पत्रिका 'जोहार' का तृतीय अंक हडको कार्मिकों में हिन्दी के प्रति अपनी रूची एवं उत्साह को बढ़ाने में सहायक होगी। वार्षिक गृह पत्रिका 'जोहार' का तृतीय अंक के प्रकाशन के लिए क्षेत्रीय कार्याल, राँची के सभी कर्मियों को बहुत-बहुत बधाई।

शुभकामनाओं सहित,

एम. नागराज
निदेशक (कॉर्पोरेट प्लानिंग)

संदेश

मुझे यह जानकर हर्ष का अनुभव हो रहा है कि हडको क्षेत्रीय कार्यालय, राँची वार्षिक गृह पत्रिका ''जोहार'' का तृतीय अंक प्रकाशित करने जा रहा है। हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है, इस भाषा के राष्ट्रव्यापी प्रचार एवं प्रसार को बढ़ाने में हडको का सहयोग अपेक्षित है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए हडको निरंतर प्रयासरत है। हिन्दी भाषा के प्रयोग, प्रचार-प्रसार एवं इसके विस्तार को बढ़ाना हमारी नैतिक एवं संवैधानिक जिम्मेदारी है।

मुझे आशा है कि क्षेत्रीय कार्यालय, राँची द्वारा प्रकाशित की जा रही वार्षिक गृह पत्रिका ''जोहार'' का तृतीय संस्करण हडको में कार्यरत सभी कर्मियों की लेखन शक्ति को उभारने एवं उनमें नवीन उत्साह का संवर्धन करने में मददगार सिद्ध होगा। वार्षिक गृह पत्रिका ''जोहार'' का तृतीय संस्करण प्रकाशित करने के लिए संपादक मण्डल एवं क्षेत्रीय कार्यालय, राँची के सभी कर्मियों को मैं बधाई देता हूँ।

शुभकामनाओं सहित,

दलजीत सिंह खत्री
निदेशक (वित्त)

संदेश

गृह पत्रिका 'जोहार' के तृतीय अंक आपके समक्ष रखते हुए हमें अत्यधिक प्रसन्नता हो रही है। भाषा संप्रेशण एवं अभिव्यक्ति का विशेष माध्यम है, जिसका आवरण प्रत्येक व्यक्ति पर संकलित रहता है, जिससे हम कभी दूर जा ही नहीं सकते। झारखंड स्थित राँची क्षेत्रीय कार्यालय, भारत सरकार के राजभाषा अधिनियम 1963 के अधिन भाषा के क्षेत्रीय आधार पर वर्गीरण के अनुसार श्रेणी 'क' क्षेत्र में आता है इसलिए राजभाषा के विकास की जिम्मेदारी परम आवश्यक है।

हडको द्वारा समाज के सभी वर्गो विशेष रूप से आर्थिक रूप से अत्यंत पिछड़े, साधन विहीन समाज से तिरस्कृत एवं गरीबी रेखा से नीचे जीवन-यापन कर रहे तबके को ध्यान में रख कर आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है।

हडको क्षेत्रीय कार्यालय, राँची मुख्यालय राजभाषा विभाग के द्वारा निर्धारित किए गए वार्षिक कार्यक्रमों एवं तय मानदण्डो के पालन की जिम्मेदारी कर्तव्य परायणता व आत्मीयता के साथ कर रहा है।

आशा है कि''जोहार'' पत्रिका के तृतीय अंक का प्रकाशन निरंतर और निर्बाध रूप से राजभाषा के उत्थान में एक मील का पत्थर साबित होगी। राजभाषा हिन्दी पाठकों के बहुमूल्य सुझाव सदैव आमंत्रित है, जिससे 'जोहार' पत्रिका को आगे और भी मौलिक, रचनात्मक, तथ्यातमक एवं प्रगतिशील बनाया जा सकेगा और राजभाषा के रूप में हिन्दी को जन-जन तक पहुँचाने के प्रयास में हम सफल हो सकेंगे। राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार और प्रयोग हेतु हडको राँँची क्षेत्रीय कार्यालय के सभी सदस्यों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों के सराहनीय प्रयासों से जोहार पत्रिका के तृतीय अंक का प्रकाशन संभव हो पाया है।

शुभकामनाओं सहित,

मधुकर डी. उगेमुगे
क्षेत्रीय प्रमुख

मेरी कलम से...

मुझे यह बताते हुए बहुत खुशी हो रही है कि हडको क्षेत्रीय कार्यालय, राँची निरंतर तीसरी बार गृह पत्रिका जोहार का प्रकाशन करने में सफल रहा है। यह प्रयास कार्यालय के सभी कर्मियों एवं हडको क्षेत्रीय कार्यालयों से प्राप्त सुझावों को समाहित करते हुए आप सभी के सहयोग से पूर्ण हो पाया है। इस सहयोग के लिए मैं विशेष रूप से कार्यालय के सभी कर्मियों एवं हडको क्षेत्रीय कार्यालयों का आभार प्रकट करता हूँ। मुझे आशा है कि हडको क्षेत्रीय कार्यालय राँची अपने कर्मियों के उत्साहजनक प्रयासों एवं पूर्ण सहयोग के माध्यम से आने वाले वर्षों में भी निरंतर राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार को बढ़ाते हुए कार्यालय में अपने हिन्दी पत्राचार के शत् प्रतिशत एवं टिप्पण के लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल होगा। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सभी कार्यालय कर्मियों से अपेक्षा की जाती है कि वह हिन्दी कार्यों के प्रचार–प्रसार एवं प्रगति को निरंतर बनाये रखने के लिये एक नई उर्जा के साथ प्रयत्नशील रहेंगे। कार्यालय कर्मियों के सराहनीय प्रयासों एवं सहयोग का ही परिणाम है कि हडको क्षेत्रीय कार्यालय, राँची ने **''जोहार''** हिन्दी वार्षिक पत्रिका के तृतीय अंक के प्रकाशन में सफलता प्राप्त की है। हमारे कार्यालय में अहिन्दी भाषी कर्मियों की संख्या लगभग 70 प्रतिशत है फिर भी क्षेत्रीय कार्यालय के सभी कर्मियों का हिन्दी कार्यों के प्रति इमानदारी से किये गये प्रयास एवं कार्यों से ही यह कार्य सफल हो पाया है। इस अपार सफलता के लिये मैं क्षेत्रीय प्रमुख महोदय एवं कार्यालय के सभी कर्मियों का तहे दिल से शुक्रगुजार हूँ एवं बधाई देते हुए आप सभी का पुनः आभार प्रकट करता हूँ।

उम्मीद करता हूँ कि राँची क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा प्रकाशित किया जा रही हिन्दी पत्रिका ''जोहार'' का तृतीय अंक आप सभी को पसंद आयेगा एवं हिन्दी कार्यों के प्रति उर्जावान बनाने एवं प्रोत्साहित करने में लाभकारी सिद्ध होगा।

मो० आरिफ एनाम
वरिष्ठ प्रबंधक (सचिवीय/राजभाषा)

झारखण्ड प्रदेश एक संक्षिप्त परिचय

झारखण्ड पूर्वी भारत का एक राज्य है। राँची इस की राजधानी है। झारखण्ड की सीमाएं पूर्व में पश्चिम बंगाल, पश्चिम में उत्तर प्रदेश एवं छत्तीसगढ़, उत्तर में बिहार और दक्षिण में उड़ीसा से लगती है। लगभग सम्पूर्ण प्रदेश छोटानागपुर के पठार पर स्थित है। सम्पूर्ण भारत में वनों के अनुपात में यह प्रदेश एक अग्रणी राज्य है। क्षेत्रफल के आधार पर यह 15वां सबसे बड़ा राज्य है और जनसंख्या के आधार पर 14वां सबसे बड़ा राज्य है। राज्य की आधिकारिक भाषा हिन्दी है। बिहार के दक्षिणी भाग को विभाजित कर झारखण्ड प्रदेश का सृजन किया गया। इस प्रदेश के बड़े शहरों में जमशेदपुर, धनबाद एवं बोकारो शामिल है।

नामकरण :

कुड़माली भाषा में ''झार'' शब्द का अर्थ है ''जंगल'' और ''खण्ड'' शब्द का अर्थ है ''भूमि'' इस प्रकार झारखण्ड का अर्थ है ''वनभूमि''। छोटानागपुर पठार पर बसा होने के कारण इसे छोटानागपुर प्रदेश भी कहा जाता है। झारखण्ड को जंगलों का प्रदेश भी कहते हैं। मुगलकाल में इस क्षेत्र को ''कुकरा'' नाम से जाना जाता था। झारखण्ड के आदिवासियों के अनुसार दो शब्द ''जाहेर'' (सरना स्थल) और ''खण्ड'' (वेदी) शब्द से मिल कर बना है। प्राचीन काल में सुतिया नामक मुण्डा के शासनकाल में इसे ''जाहेर खोण्ड'' के नाम से जाना जाता था। मध्य काल में इस क्षेत्र को झारखण्ड के नाम से जाना जाता था। संसद ने वर्ष 2000 मे ''बिहार पुनर्गठन बिल'' के पास होने के बाद इसे अलग राज्य का दर्जा प्राप्त हुआ। 15 नवम्बर 2000 को झारखण्ड भारत के 28वें राज्य के रूप में अस्तित्व में आया।

झारखण्ड आंदोलन

अमरेन्द्र कुमार
उप प्रबंधक (परियोजना)

झारखण्ड आंदोलन भारत के छोटानागपुर पठार और इसके आसपास के क्षेत्र, जिसे झारखण्ड के नाम से जाना जाता है, को अलग राज्य का दर्जा देने की माँग के साथ शुरू होनेवाला एक सामाजिक-राजनीतिक आंदोलन था। इसकी शुरूआत 20वीं शदी के शुरूआत में हुई। अंततः संसद ने वर्ष 2000 मे ''बिहार पुनर्गठन बिल'' के पास होने के बाद इसे अलग राज्य का दर्जा प्राप्त हुआ। 15 नवम्बर 2000 को झारखण्ड भारत के 28वें राज्य के रूप में अस्तित्व में आया।

झारखण्ड वनों से आच्छादित छोटानागपुर के पठार का हिस्सा है जो गंगा के मैदानी हिस्से के दक्षिण में स्थित है। झारखण्ड शब्द का प्रयोग कम से कम चार सौ साल पहले सोलहवीं शताब्दी में हुआ माना जाता है। अपने बृहत और मूल अर्थ में झारखण्ड क्षेत्र में पुराने बिहार के ज्यादातर दक्षिणी हिस्से और छत्तीसगढ़, पश्चिम बंगाल और उड़ीसा के कुछ जिले शामिल हैं। इस क्षेत्र में नागपुरी और कुड़माली बोली जाती है। इसके अलावा कुछ क्षेत्र में मुंडारी, हो, संताली, भूमिज, खड़िया तथा खोरठा भाषा बोली जाती है।

1845 में पहली बार यहाँ ईसाई मिशनरियों के आगमन से इस क्षेत्र में एक बड़ा सांस्कृतिक परिवर्तन और उथल-पुथल शुरू हुआ। मिशनरियाँ आदिवासी समुदाय के एक बड़ा और महत्वपूर्ण भाग कोई साई बनाने में सफल रही। उन्होंने क्षेत्र में ईसाई स्कूल और अस्पताल खोले। लेकिन ईसाई धर्म में बृहत धर्मांतरण के बावजूद आदिवासियों ने अपने पारंपरिक धार्मिक आस्थाएँ भी कायम रखी।

झारखण्ड के खनिज पदार्थों से संपन्न प्रदेश होने का खामियाजा भी इस क्षेत्र के आदिवासियों को चुकाना पड़ा है। यह क्षेत्र भारत का सबसे बड़ा खनिज क्षेत्र है जहाँ कोयला, लोहा प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। इसके अलावा बॉक्साईट, ताँबा, चूना पत्थर इत्यादि जैसे खनिज भी बड़ी मात्रा में है। यहाँ कोयले की खुदाई पहली बार 1856 में शुरू हुआ और टाटा आयरन ऐंड स्टील कंपनी की स्थापना 1907 में जमशेदपुर में की गई। इसके बावजूद कभी केन्द्र और राज्य सरकार द्वारा इस क्षेत्र की प्रगति पर ध्यान नहीं दिया गया।

भूमिज और कोल आंदोलन : 1830 में गंगा नारायण सिंह के नेतृत्व में झारखण्ड के जंगल महल और सिंहभूम में आदिवासियों का सबसे शक्तिशाली आंदोलन हुआ, जिसमें ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन को हिलाकर रख दिया। गंगा नारायण ने क्षेत्र में आदिवासी राज स्थापित करने के लिए क्षेत्र के भूमिजों को एकजुट किया और कंपनी शासन पर धावा बोला। यह भारत में पहला संगठित आंदोलन था, जो 7 फरवरी 1833 को गंगा नारायण की मृत्यु के साथ थम गया। इसे ''जंगल महल आंदोलन'' के नाम से भी जाना जाता है।

छोटानागपुर में बिंदराय मानकी और सिंदराय मानकी ने 1832 में कोल विद्रोह की शुरूआत की, झारखण्ड में हजारो दिकुओं (बाहरी लोगों) की हत्या की गई। झारखण्ड के कोल (हो, भूमिज मुण्डा और उरांव) आदिवासियों ने इसमें बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया।

संथाल विद्रोह : वैसे तो स्वाधीनता संग्राम की पहली लड़ाई 1857 में मानी जाती है, मगर इसके पहले ही वर्तमान के झारखण्ड राज्य के संथाल परगना में संथाल हूल और संथाल विद्रोह के से अंग्रेजों को भारी क्षति उठानी पड़ी थी। झारखण्ड प्रदेश में 'सिद्धू–कान्ह' के नेतृत्व में अंग्रेजों के खिलाफ अजादी का पहला विगुल संथाल विद्रोह के रूप में फूंका गया। सिद्धू–कान्हू दो भाइयों के नेतृत्व में 30 जून 1855 को वर्तमान साहेब गंज जिले के भगनाडीह गांव से प्रारंभ हुए इस विद्रोह के मौके पर सिद्धू ने घोषणा की थी ''करो या मरो'' अंग्रेजों हमारी माटी छोड़ो।

इतिहासकारों के मुताबिक, संथाल परगना के लोग प्रारंभ से ही वनवासी स्वाभाव से धर्म और प्रकृति के प्रेमी और सरल होते हैं। इसका जमींदारों और बाद में अंग्रेजों ने इसका खूब लाभ उठाया। इतिहासकारों का कहना है कि इस क्षेत्र में अंग्रेजों ने राजस्व के लिए संथाल पहाड़ियों तथा अन्य निवासियों पर मालगुजारी लगा दी। इसके बाद न केवल यहां के लोगों का शोषण होने लगा, बल्कि उन्हें मालगुजारी भी देनी पड़ रही थी। इस कारण यहां के लोगों में विद्रोह पनप रहा था।

नागपुरी साहित्य और इतिहासकार बी.पी. केशरी के अनुसार यह विद्रोह भले ही संथाल हूल हो परंतु संथाल परगना के समस्त गरीबों और शोषितों द्वारा शासकों, अंग्रेजों एवं उसके कर्मचारियों के विरूद्ध स्वतंत्रता आंदालेन था। इस जनआंदोलन के नायक भगनाडीह निवासी भूमिहीन किंतु ग्राम प्रधान चुन्नी मरांडी के चार पुत्र सिद्धू, कान्हू, चांद और भैरव थे।

हूल आंदोलन : ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी, जमींदार और सामंतवादियों के क्रूर नीतियों के खिलाफ पूर्वी भारत में झारखण्ड में एक विद्रोह हुआ। यह 1855 से 1856 तक चला। विद्रोह का नेतृत्व चार मुर्मू भाईयों–सिद्धु, कान्हू, चांद और भैरव तथा दो जुड़वा बहनें–फूलो और झानों ने किया। यह संतालों का सबसे बड़ा विद्रोह था। इसे ''संथाल विद्रोह'' या ''हूल आन्दोलन'' कहा जाता है।

उलगुलान आंदोलन : वर्ष 1900 में बिरसा मुण्डा द्वारा अंग्रजों के विरूद्द किये गये विद्रोह का मुख्य उद्देश्य छोटानागपुर में मुण्डा राज स्थापित करना था। अंग्रजों द्वारा शोषण और जल, जंगल और जमीन के अधिकारों से वंचित होना आदिवासियों की सबसे बड़ी नाराजगी थी। बिरसा मुण्डा आदिवासियों के एक महान नेता के रूप में उभरे, किन्तु वह औपनिवेशिक शासन का अंत करने में विफल रहे। इस विद्रोह को ''उलगुलान आंदोलन'' कहा जाता है।

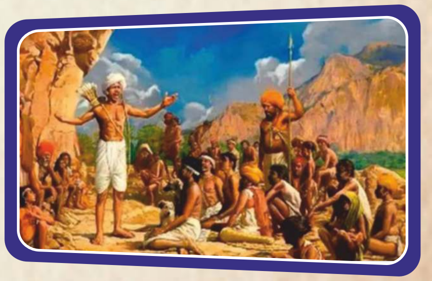

आधुनिक काल : अलग झारखण्ड राज्य आंदोलन की शुरूआत 20वीं शदी के शुरूआत में हुई, जिसकी पहल ईसाई आदिवासियों द्वारा शुरू की गई। लेकिन बाद में इसे सभी वर्गों एवं गैर आदिवासियों का सहयोग हासिल हुआ। अलग राज्य की मांग 1912 में शुरू हुई, जब पहली बार इसका प्रस्ताव सेंट कोलंबिया कॉलेज, हजारीबाग के एक छात्र ने रखा था। 1928 में ईसाई आदिवासियों की एक राजनीतिक शाखा ''उन्नति समाज'' ने पूर्वी भारत में एक आदिवासी राज्य के गठन के लिए साइमन कमीशन को एक ज्ञापन सौंपा। जयपाल सिंह मुंडा और रामनारायण सिंह जैसे बड़े

नेता ने अलग राज्य की मांग की। 1939 में 'उन्नति समाज' का नाम बदलकर 'आदिवासी महासभा' कर दिया गया, जयपाल सिंह मुंडा इसके अध्यक्ष बने। 'आदिवासी महासभा' ने बिहार, मध्य प्रदेश, पश्चिम बंगाल और ओड़िशा के कुल 28 जिलों को मिलाकर अलग झारखण्ड राज्य की सीमा तैयार की। बाद में 'आदिवासी महासभा' का नाम बदल कर 'झारखण्ड पार्टी' कर दिया गया।

आजादी के बाद : 1947 में भारत की आजादी के बाद व्यवस्थित रूप से औद्योगिक विकास पर काफी बल दिया गया जो भारी उद्योगों पर केन्द्रित थीं और जिसके लिए खनिजों की खुदाई एक जरूरी हिस्सा थी। समाजवादी सरकारी नीति के तहत भारत सरकार द्वारा स्थानीय लोगों की जमीनें बगैर उचित मुआवजे के अन्य हाथों में जाने लगीं। दूसरी तरफ सरकार का यह भी मानना था कि चूँकि यहाँ की जमीन बहुत उपजाऊ नही है इसलिये यहाँ औद्योगीकीकरण न सिर्फ राष्ट्रीय हित के लिये आवश्यक है बल्कि स्थानीय विकास के लिये भी जरूरी है। लेकिन औद्योगिकीकरण का नतीजा हुआ कि यहाँ बाहरी लोगों का दखल और भी बढ़ गया और बड़ी संख्या में कारखानों में काम की तलाश में लोग बाहर से यहाँ आने लगे। इससे यहाँ स्थानीय लोगों में असंतोष की भावना उभरने लगी और उन्हें लगा कि उनके साथ नौकरियों में भेद-भाव किया जा रहा है। 1971 में बनी राष्ट्रीय खनन नीति इसी का परिणाम था। सरकारी भवनों, बाँधों इत्यादि के लिये भी भूमि का अधिग्रहण होने लगा। लेकिन कुछ पर्यवेक्षकों का मानना है कि इन बाँधों से उत्पादन होने वाली विद्युत का बहुत कम हिस्सा इस क्षेत्र को मिलता था। इसके अलावा सरकार द्वारा वनरोपण के क्रम में यहाँ की स्थानीय रूप में उगने वाले पेड़ पौधों के बदले व्यवसायिक रूप से लाभदायक पेड़ों का रोपण होने लगा। पारंपरिक झूम खेती और चारागाह क्षेत्र सिमटने लगे और उनपर प्रतिबंधों और नियमों की गाज गिरने लगी। आजादी के बाद दशकों से ऐसी अनेक समस्याएँ बढ़ती गयी।

राजनीतिक स्तर पर 1938 में जयपाल सिंह मुंडा के नेतृत्व में झारखण्ड पार्टी का गठन हुआ जो पहले आम चुनाव में सभी आदिवासी जिलों में पूरी तरह से दबंग पार्टी रही। जब राज्य में पुनर्गठन आयोग बना तो झारखण्ड की भी मांग हुई जिसमें तत्कालीन बिहार, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल और मध्य प्रदेश के 21 जिले शामिल थे। आदिवासियों के लिए अलग राज्य के आंदोलन में संताल, मुंडा, उरांव, भुमिज, खड़िया जैसे बड़ी जनजातियों के साथ-साथ छोटे जनजानियों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। इस आंदोलन में गैर-जनजातीय समुदायों जैसे कुड़मी महतो का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा। आयोग ने इस क्षेत्र में कोई एक आमभाषा न होने के कारण झारखण्ड के दावे को खारिज कर दिया। इसकी प्रतिक्रिया स्वरूप छोटानागपुर क्षेत्र में कई छोटे छोटे झारखण्ड नामधारी दलों का उदय हुआ जो आमतौर पर विभिन्न समुदायों का प्रतिनिधित्व करती थी और चुनावी सफलताएँ भी हासिल करती थी।

झारखण्ड आंदोलन में झारखण्ड आदिवासी और गैर-ईसाई आदिवासी समूहों में भी परस्पर प्रतिद्वंदिता की भावना रही है। इसका कुछ कारण शिक्षा का स्तर रहा है तो कुछ राजनैतिक। 1940-1960 के दशकों में गैर-ईसाई आदिवासियों ने अपनी अलग संस्थाओं का निर्माण किया और सरकार को प्रतिवेदन देकर ईसाई आदिवासी समुदाओं के अनुसूचित जनजाति के दर्जे को समाप्त करने की माँग की, जिसके समर्थन और विरोध में काफी राजनैतिक गोलबंदी हुई। 1967 में अखिल भारतीय झारखण्ड पार्टी का गठन किया गया, जिसमें बागुन सुंब्रई अध्यक्ष और एनईर होरो महासचिव बने। इसके बाद, हूल झारखण्ड और बिरसा सेवा दल का भी गठन हुआ। इसी वर्ष बिनोद बिहारी महतों द्वारा शिवाजी समाज नामक संगठन की स्थापना की गई। 1969 में शिबू सोरेन द्वारा संथाल समाज संगठन की स्थापना की। 1986 में निर्मल महतो ने ऑल झारखण्ड स्टुडेंट्स यूनियन की स्थापना की और झारखण्ड अलग राज्य के लिए कई आंदोलन किया।

अंततः काफी समय तक चले कठिन संघर्ष एवं अथक प्रयासों के बाद झारखण्ड के अलग राज्य के मांग के संघर्ष को संसद में वर्ष 2000 में ''बिहार पुनर्गठन बिल'' के पास होने के बाद झारखण्ड राज्य का दर्जा प्राप्त हुआ एवं 15 नवम्बर 2000 को झारखण्ड राज्य भारत के 28वें राज्य के रूप में प्रतिस्थापित हुआ।

झारखण्ड की कलाशिल्प

मो० आरिफ एनाम
वरिष्ठ प्रबंधक (सचिवीय/राजभाषा)

झारखण्ड अपने मुंडा, उरांव, हो, बंजारा, बिहोर और संथाल जैसे कई आदिवासी समुदायों के साथ-साथ छिल्का-रोटी और मालपुआ जैसे स्वादिष्ट व्यंजनों, जीवंत आदिवासी नृत्यों और बड़ी स्टील फैक्ट्रियों के साथ, शिल्प परंपराओं का भी एक आश्रय स्थल है जो इसके सौंदर्य क्षेत्र को आकार देने और परिभाषित करने के लिए जरूरी है। जनजातियों की समृद्ध ताने-बाने वाले राज्य के लिए कलात्मक अभिव्यक्तियों का मिश्रण न दिखाना असंभव है। झारखण्ड इन सभी मिश्रणों का प्रतीक है जो इसे कलात्मक परंपरा का एक प्रामाणिक गढ़ बनाता है।

सोहराई पेंटिंग : अपनी आकर्षक मोटी रेखाओं और विशिष्ट एक वर्णी रंगों के साथ सोहराय एक विशिष्ट कला होने के साथ-साथ एक त्यौहार भी है जो झारखण्ड के कई आदिवासी गांवों में फसल की कटाई का जश्न मनाता है। सोहराय शब्द का अर्थ है ''लाठी से हांकना'', और अपने नाम को सार्थक करते हुए थे भित्तिचित्र दातुन या चबाए हुए नीम की लकड़ियों का उपयोग करके बनाए गए हैं। झारखण्ड पेंटिंग कई मायनों में रत्न है। मधुबनी पेंटिंग की तरह, ये मिट्टी की दीवार पेंटिंग माताओं से बेटियों को दी जाती हैं, जो हमें उस स्थान और स्वायत्तता के बारे में भी बताती है। बेशक, एक स्तर पर, बैल, हाथी, पेड़, मछलियाँ आदि जैसे कई रूपांकन सीधे झारखण्ड में देखे जाने वाले प्राकृतिक वनस्पतियों-जीवों से लिए गए हैं, दूसरी तरफ आदिवासी महिलाओं द्वारा लगाए गए रंग भी प्राकृतिक हैं, जिनमें मिट्टी या कीचड़ के विभिन्न रूपों और चारकोल का उपयोग किया गया है। तीसरा, सोहराई बनाने की कला स्वाभाविक रूप से एक अंतर्निहित अवधारणा को मूर्त रूप देती है जो अत्यधिक रूपक है।

कोहवर चित्रकला : कोहवर नाम 'कोह' शब्द से लिया गया है जिसका अर्थ गुफा है, जबकि 'वर' पति को संदर्भित करता है, यह एक पुरुष और महिला के संबंध को परिभाषित करता है। नतीजन, यह भित्ति चित्र नवविवाहित दुल्हा और दुल्हन के घर की दीवारों पर बनाया जाता है। बसंत ऋतु आदर्श मौसम के रूप में कार्य करती है जब कोहवर को नए सिरे से रूचि के साथ जीवंत किया जाता है क्योंकि उंगलियों को प्राकृतिक रंगो में डुबोया जाता है। अन्य समय के दौरान, दातुन या नीम की छड़ियों को टूथी मट्टी (सफेद मिट्टी), काली मिट्टी (मैंगनीज काला), पिला मिट्टी (पीला गेरू), लाल मिट्टी या गेरू (लाल ऑक्साइड) में डुबोया जाता है ताकि मिट्टी की दीवारों को मछलियों, मोर, जानवरों, कमल और बड़े-से-बड़े तत्वों से सजाया जा सके।

जादोपटिया पेंटिंग : चाहे शक्तिशाली वैदिक भजनों, पौराणिक प्रसंगों या ताड़ के पत्तों पर लिखे गए लेखन की मौखिक परंपरा के माध्यम से प्राचीन भारतीय ने महाकाव्यों और विचारों के अमृत को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाने के लिए लगातार सरल

तरीके खोजे थे। उसी परंपरा का अनुसरण करते हुए, स्क्रॉल कला एक विस्तार के रूप में उभरी। पोर्टेबल स्क्रॉल कला सदियों से भारत का हिस्सा रही है और आज भी इसके विविध क्षेत्रीय संस्करण मौजूद हैं जैसे कि उड़ी सामेंपट्ट चित्र, कर्नाटक में चेरियाल, राजस्थान में फड़ और झारखण्ड में जादोपटिया। ताड़ के पत्तों के उपयोग से लेकर कागज के माध्यमों तक और पेड़ों की छाल और खनिजों से बने पारंपरिक रंगों से लेकर आधुनिक जल रंगों तक, जादोपटिया स्क्रॉल ने एक लंबा सफर तय किया है।

पैतकर पेंटिंग : राज्य की आदिवासी विरासत, जीवन शैली, रीति-रिवाज और त्यौहारों को पारिभाषित करने में सबसे आगे आने वाली एक और रचनात्मक अभिव्यक्ति पैंतकर स्क्रॉल कला है। पैंतकर स्क्रॉल कला की कुछ सामान्य पारिभाषित विशेषताएँ इस प्रकार हैं : भूरा-पीला रंग और इसी तरह के रंग पैलेट का उपयोग। मानव शरीर में गोल-आकृतियाँ, उल्लेखनीय आँखें तथा एक दूसरे में उल्लेखनीय समानता होती है। जमशेदपुर जिले का अमाटुबी गांव वह जगह है जहां चित्रकार समुदाय पाया जा सकता है, जिसका अस्तित्व पैतकर पेंटिंग की देहाती कला को बचाए रखता है। न केवल रूपांकन बल्कि रंग भी सीधे प्रकृति से प्राप्त होते हैं। पेड़ों की छाल, फूल, मिट्टी और पत्थर कुछ ऐसे मुख्य तत्व हैं जिन से रंग द्रव्य प्राप्त होते हैं।

कुर्मी चित्रकला : तेली, प्रजापति, सोहारी और कुर्मी कुछ स्थानीय जनजातियाँ है, जिन्होंने प्रागैतिहासिक प्रतिमा विज्ञान से संबंधित शैली को अपनाया है। कुर्मी का अर्थ-हिंदू आदिवासी समुदाय झारखण्ड के घने जंगलों में रहता है। धब्बेदार और धारीदार जानवर, लंबी गर्दन वाले चौपाए और सींगवाले देवता कुछ दृश्यमान जीवन रूप हैं जिन्हें भी लवाड़ा प्रांत की कुर्मी महिलाएँ अक्टूबर और नवंबर के कटाई के मौसम के दौरान अपने घर की दीवारों को रंगने के लिए चुनती है। कोहवर और सोहराई चित्रों में इस्तेमाल किए जानेवाले प्राकृतिक रूप से प्राप्त पीले और लाल मिट्टी के गेरू का इस्तेमाल यहाँ भी किया जाता है।

आदिवासी आभूषण : झारखण्ड का एक और प्रसिद्ध शिल्प प्रतीकात्मकता से भुरपूर है और वह है स्वदेशी आदिवासी आभूषण। आदिवासी आभूषण हमें न केवल आभूषण बनाने में शामिल निर्माताओं के कौशल के बारे में बताते हैं बल्कि इससे जुड़े सामाजिक-जातीय समूहों के बारे में भी बताते हैं। ये गहने चांदी और मोतियों जैसे साधारण और सुलभ कच्चे माल से बनाए जाते हैं। इनमें न केवल देहाती आकर्षण होता है बल्कि ये देखने में भी काफी परिष्कृत होते हैं। शरीर के विभिन्न अंगों पर अपने सुसज्जित आभूषणों को प्रदर्शित करना गर्व की बात है-माथे पर टिकुली से शुरूआत करके, गर्दन पर हसुली और कमर पर करधनी तक, और यह सूची अंतहीन है जहां उनकी जंजीरों में छोटी-छोटी झंकारें होती हैं, वहीं संथाली और मुंडा महिलाएं भी फिलाग्री और मोतियों से बनी नाजुक बालियां पहनती हैं।

टेराकोटा :

जहाँ तक झारखण्ड में मिट्टी के शिल्प और टेराकोटा की उत्पत्ति का सवाल है, यह परंपरा मौर्यकाल से चली आ रही है। टेराकोटा मिट्टी के बर्तन होते हैं जो लाल मिट्टी को पकाकर बनाए जाते हैं। उत्तरी भारत के कई हिस्सों की तरह कुम्हार या कुम्हार ही मिट्टी की मूर्तियों और वस्तुओं को कार्यात्मक या सजावटी वस्तुओं में तराशने और पकाने के लिए जिम्मेदार होते हैं। पक्षियों, हाथियों और घोड़ों से लेकर पानी के घड़े, फूलदान और दीये तक।

ढोकरा शिल्प (खोई हुई मोम तकनीक):

कई भारतीय शिल्पों की सुंदरता का एक बड़ा हिस्सा उनकी अंतर्निहित प्राचीनता में निहित है, एक ऐसा गुण इन वस्तुओं को तैयार करने में इस्तेमाल होने वाली स्थिरता के तत्व से भी जुड़ा हुआ है। ढोकरा बनाना एक बारीक प्रक्रिया है जिसमें मिट्टी का साँचा तैयार करना, मिट्टी के साँचे को गर्म टार से ढकना, टार के धागों से लिपटे साँचे पर प्रकृति से प्रेरित रूपांकनों को उकेरना, साँचे में धातु भरना और उसे पकाना जैसे कदम शामिल हैं।

झारखण्ड की काष्ट कला :

झारखण्ड नाम का अर्थ है ''जंगल की भूमि''। झारखण्ड की भूमि पर वनस्पति और जीव-जंतु हावी हैं। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि हरे-भरे वनस्पतियों से भरा यह राज्य लकड़ी के शिल्प में भी समृद्ध है। बक्से, दरवाजे, लकड़ी के बर्तन, आंतरिक सज्जा और साज-सज्जाल कड़ी से बने उत्पादों की एक विस्तृत श्रृंखला के अंतर्गत आते हैं। झारखण्ड के पहाड़ी इलाके वे हैं जहाँ लकड़ी का उत्पादन केंद्रित है। झारखण्ड का लकड़ी का खिलौना बनाने का उद्योग भी देश में प्रमुखता से उभर रहा है।

बांस और बेंत शिल्प :

बांस झारखण्ड सहित भारत के कई क्षेत्रों में पाए जानेवाले अभिन्न और बहुमुखी उत्पादो में से एक है। टोकरी (टोकरी), कुर्सियाँ, लैंप, फूलदान, शिकार और मछली पकड़ने के उपकरण सहित कई रोजमर्रा के उत्पाद सीधे बांस से प्राप्त किए जाते हैं। झारखण्ड के जंगलों से मिलने वाला बांस पतला लेकिन लचीला और टिकाऊ होता है। इस निपुण हस्तकला में जो निपुणता होती है, वह आम उपभोक्ताओं को हमेशा आकर्षित करती है। इसके अलावा, झारखण्ड के कई घर स्वादिष्ट करी और बांस के अचार बनाने के लिए बांस की टहनियों का आसानी से उपयोग करते हैं।

कुचाई या तसर रेशम :

जैविक और टिकाऊ कोचाई या कोसा या तसर मुख्य रूप से झारखण्ड के खारसवान-खुचाई क्षेत्र में उत्पादित किया जाता है। भारत में तसर रेशम का लगभग 40% उत्पादन झारखण्ड में होता है। ये रेशम, विशेष रूप से साड़ी बनाने में उपयोग किया जाता है, चौड़े पंख वाले पतंगों के लाखों जैविक रेशम कोकून की कटाई से बनाया जाता है। इसने कई खरीदारों के बीच इसकी वांछनीयता में बहुत योगदान दिया है। व्यापार और उत्पाद से स्थिरता के मानकों को पूरा करने की उम्मीद की जाती है, खासकर 2008 में राज्य को ''जैविक रेशम'' पंजीकरण प्राप्त होने के बाद। इस रेशम की तैयारी के दौरान, कोकून को मारने के बजाय, इसे उड़ने के लिए स्वतंत्र छोड़ दिया जाता है।

स्थानीय भाषा में रखे गए नामों में प्रकृति प्रेम की झलक

श्रीमती विनीता प्रकाश
उप प्रबंधक (आई.टी.)

आधुनिकता और नाम कमाने की होड़ में जहाँ लोग अपने पूर्वजों के नाम पर अस्पताल, धर्मशाला और स्कूल खोलते हैं। वहीं प्रकृति की रक्षा के लिए ही अपने गाँवों का नाम भी प्रकृति से जुड़ी चीजों से रखते थे। झारखण्ड में एक ऐसा जिला भी है, जहां लोगों ने प्रकृति और पशु-पक्षियों से अपना लगाव दिखाने के लिए इस जिले का नाम सिमडेगा रखा है। सिमडेगा शहर का नाम 'बीस' और 'डेगा' से पड़ा है जहाँ 'बीस' का अर्थ 'हम' और 'डेगा' का अर्थ' नदी' है, क्योंकि यह नदी के पास स्थित है। ओड़िशा वे छत्तीसगढ़ सीमा से सटे सिमडेगा जिला जंगलों, पहाड़ो ं और नदियों की खूबसुरती को अपने दामन में समेटे हैं। जिले के लगभग हर हिस्से में नाम के पीछे प्रकृति प्रेम स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। बांसजो, बंदरचुआं, भंवरपहाड़, डुकरडीह, डुमरटोली, जामटोली, करमटोली, कउंदटोली, डुमरदगपा, जामतई, कौवाजोर, खिजूर बहार, कुसुम, नीमतुर, बरड़ेगांवों के ऐसे नाम हैं, जिनमें प्रकृति से प्रेम की अनुगूंज है जो यहां के लोगों का प्रकृति के साथ-साथ पशु-पक्षियों से विशेष प्यार को दर्शाते हैं। यही कारण है कि जिले के दर्जनों ऐसे गांव हैं, जिनके नाम में पशु-पक्षी, जंगल-पहाड़, पेड़-पौधों पर आधारित है। इन गांवों के नाम भी हमें सोचने पर मजबूर करते हैं।

गांव के नाम के पीछे की कहानी से अनभिज्ञ हैं लोग :

पशु-पक्षी, पेड़-पौधे, जंगल-पहाड़ के नाम से जुड़े गांवों के नामकरण की कहानी के सच का कोई प्रमाण नही है। लेकिन गांवों के कुछ बुजुर्ग बताते हैं कि पूर्वजों ने प्रकृति, पशु-पक्षी और जानवरों से लगाव को अमर रखने के लिए इन गांवों का नामकरण किया होगा। हालांकि क्षेत्र में दूसरी जगहों से पहुंचने वाले लोग नामकरण की सच्चाई जानने के लिए हमेशा उत्सुक देखे जाते हैं। आरानी पंचायत जंगलों के बीच में बसा है। इसी में एक सरईपानी गांव है। सरई यानी की सखुआ का पेड़। बताया जाता है कि यहां एक जगह बड़ी संख्या में सखुआ का पेड़ पाए जाते थे। उनकी तराई वाले क्षेत्र में पानी रिस-रिस कर सालों भर बहते रहता था। इसको ग्रामीण अपने उपयोग में लाते थे। इसी कारण इसको सरई पानी नाम से जानने लगे।

कई गांवों के नाम हमें सोचने पर मजबूर कर देते हैं कि आखिर इन नामों के पीछे की कहानी क्या है? जैसे भंवरछाबा, डुमरबेड़ा, डुमरमुंडा, मेंजुरगढ़ा, सारूबहार, महुआटोली, कुसुमडेगी, पहाड़ साड़ा, वनगांव, सर्पमुंडा, भेलवाडीह, गोंदपी पानी, हल्दीबेड़ा, पहाड़गुर्दा, डुमरडीह, बरपानी, बेलगढ़, भंवरपानी, भेड़ीकुदर ऐसे नाम हैं जो इसके पीछे की कहानी जानने के लिए उत्सुकता पैदा करते हैं। सिमडेगा जिले की पंचायत के पूर्व मुखिया सिलबेस्टर बधवार के अनुसार, हमारे पूर्वजों को प्रकृति से जुड़ाव था। लोग पेड़-पौधे, जंगल-पहाड़, पशु-पक्षी से बेहद प्यार करते थे। यही कारण है कि अपने गांवों के नाम इन पर आधारित रखा। गरजा पंचायत में स्थित बाघलाता गांव है। इस गांव की पहचान गांव से बगल में स्थित जंगल के नाम से है। जंगल का नाम बाघलाता जंगल है। इसी के नाम से बाघलाता गांव पड़ा।

झारखण्ड के प्रमुख किले/ ऐतिहासिक स्थल

श्री बिप्लब कुमार दास
प्रबंधक (वित्त)

1. **पलामू किला, बेतला राष्ट्रीय उद्यान के निकट (लातेहार) :** यह किला लातेहार जिले में बेतला उद्यान से 5 किमी. दूर औरंगा नदी पर स्थित है। इसका निर्माण चेरो वंश शासकों ने अपनी राजधानी पलामू में कराया था। यहाँ दो किले हैं-पुराना किला एवं नया किला। ये दोनों किले संयुक्त रूप से पलामू किला के नाम से प्रसिद्ध हैं। ये किले अपने समय में अभेद्य समझे जाते थे। पुराने किले का निर्माण चेरोवंशी शासक प्रताप राय (मुगल बादशाल शाहजहाँ का समकालीन) ने कराया था। नये किले का निर्माण चेरोवंशी शासक मेदनी राय 1658-74 ई. (मुगल बादशाह औरंगजेब का समकालीन) ने कराया था। नये किले का नागपुरी दरवाजा (नागपुरी फाटक) अपनी आकर्षक स्थापत्य शैली के कारण दर्शनीय है। दरवाजे की ऊँचाई 40 फीट एवं चौड़ाई 15 फीट है।

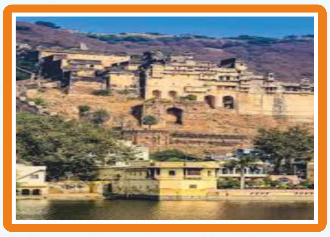

2. **नारायणपुर का किला, नावागढ़ (लातेहार) :** यह किला लातेहार जिले में लातेहार से 8 किमी. दूर दक्षिण नावागढ़ में स्थित है। इसका निर्माण चेरोवंशी शासक भगवान राय के लेखापाल जाज दास ने कराया था।

3. **शाहपुर चाँदनी, मेदनीनगर (पलामू) :** वास्तव में यह एक किले का नाम है। यह पलामू जिला के डाल्टेनगंज से पश्चिम दक्षिण कोयल नदी के पश्चिमी तट पर स्थित है। इस किला का निर्माण चेरोवंशी शासक गोपाल राय ने 1772 ई. में कराया था।

4. **विश्रामपुर का किला, विश्रामपुर (पलामु) :** यह किला पलामू जिले के विश्राम पुर में स्थित है। इस किले का निर्माण विश्रामपुर के चेरोवंशी राजा के कराया था। किले के निकट एक मंदिर है।

5. **रोहिल्लों का किला, अलीगनर (पलामू) :** यह किला पलामू जिले में जपला से 10 किमी. दूर अलीनगर में स्थित है। चूँकि इस किले का निर्माण रोहिल्ला सरदार मुजफ्फर खाँ ने कराया था, इसलिए इसे रोहिल्ला का किला के नाम से जाना जाता है। यह किला त्रिभुजाकार है।

6. **नागफेनी का राजभवन, नागफेनी गाँव (गुमला) :** यह राजभवन गुमला जिले के सिसई थाने के नागफेनी गाँव में स्थित है। इस राजभवन का निर्माण 1704 ई. के आस-पास आरंभ हुआ लेकिन पूरा न हो सका। किंवदन्ती है कि कोई राजा यहाँ पर महल बनवा रहा था, परन्तु महल बनने से पहले ही उसकी मृत्यु हो गई। यहाँ पर एक पत्थर पर राजा, उसकी सात रानियों एवं एक कुत्ते का चित्र मिलता है, लेकिन इस राजा की पहचान नहीं की जा सकी है। इतिहासविद्‌ों ने नागफनी को 'नागों का शहर' बताया है।

7. **तिलमी का किला, तिलमी गाँव (खूंटी) :** यह किला खूंटी जिले के कर्रा प्रखण्ड के तिलमा गाँव मे ंस्थित है। इस किले का निर्माण 1737 ई. में अकबर नामक एक नागवंशी ठाकुर (सामंत) ने मोक्ष प्राप्ति के उद्देश्य से कराया था।

8. **पालकोट का राजमहल, पालकोट गाँव (राँची) :** यह महल राँची जिले के पालकोट में स्थित है। नागवंशी शासक यदुनाथ शाह (1715-24 ई.) ने दोइसा के स्थान पर पालकोट को अपनी राजधानी बनाया और यहाँ अनेक भवन बनवाये। इनमें से एक महलपाल कोट का राजमहल बचा हुआ है और शेष खण्डहर में बदल गया है। यह राजमहल स्थापत्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण माना जाता है।

9. **रातू का राजमहल, रातू (राँची) :** यह महल राँची जिले के रातू में स्थित है। इसका निर्माण नागवंशी महाराज ने कराया था। इस राजमहल की विशालता दर्शनीय है।

10. **जगन्नाथपुर का किला, जगन्नाथपुर (पश्चिम सिंहभूम) :** यह किला पश्चिम सिंहभूम जिले मे ंचाईबासा से 38 किमी. दूर जगन्नाथपुर में स्थित है। इसका निर्माण पोरहाट नरेश जगन्नाथ सिंह ने कराया था।

11. **जैंतगढ़ का किला, जैंतगढ़ (पश्चिम सिंहभूम) :** यह किला पश्चिम सिंहभूम जिले में चाईबासा से 55 किमी. दक्षिण वैतरणी नदी के किनारे जैतगढ़ में स्थित है। इसका निर्माण पोरहाट नरेश काला अर्जुन सिंह ने कराया था।

12. **चक्रधरपुर की राजवाड़ी, चक्रधरपुर (पश्चिम सिंहभूम) :** यह राजधानी पश्चिम सिंहभूम जिले के चक्रधरपुर में स्थित है। इसका निर्माण 1910-20 ई. के दौरान नरपति सिंह (राजा अर्जुन सिंह का पुत्र) ने कराया था। यह राजबाड़ी ईटों से निर्मित है। तीन मंजिलों की संरचना वाले इस राज प्रसाद का रंगमहल अपनी सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है।

झारखण्ड प्रदेश की प्रमुख जनजातियां

श्री बिनय कुमार
एम.टी.एस.

झारखण्ड में संथाल, उरांव, मुंडा, हो, भूमिज और खरवार जैसी 32 जनजातियां निवास करती हैं। इन जनजातियों की अपनी विशिष्ट भाषाएं, संस्कृति और त्योहार हैं और ये सभी सरना धर्म का पालन करते हैं। हालाँकि कुछ ईसाई और हिंदू धर्म भी अपनाते हैं। झारखण्ड के जनजातीय इतिहास में मुंडाओं से पहले भी जनजातियों के शासन और बस्तियों के प्रमाण मिलते हैं, जो इस क्षेत्र की प्राचीनता को दर्शाते हैं।

- **संथाल :** ये झारखण्ड की सबसे बड़ी जनजाति है और संथाली भाषा बोलती हैं।
- **उरांव :** ये दूसरी बड़ी जनजाति है और कुरूख भाषा बोलती है।
- **मुंडा :** ये तीसरी सबसे बड़ी जनजाति है, मुंडारी भाषा बोलती है और पारंपरिक मुंडा शासन व्यवस्था से जुड़ी है।
- **हो :** चौथी सबसे बड़ी जनजाति है।
- **खड़िया :** ये मध्य भारत की एक जनजाति है। इनकी भाषा खड़िया आस्ट्रो-एशिया टिक परिवार के समूह में आती है। इस जनजाति को तीन उपजातियों में बांटा गया है, 1. शबर खड़िया या पहाड़ी खड़िया, 2. डेलकी या ढेलकी खड़िया, 3. दूध खड़िया। जनसंख्या की दृष्टि से मुंडा, संथालों, मुंडारी और हो के बाद खड़िया का स्थान है। खड़िया समुदाय मुख्यतः एक ग्रामीण खेतिहर समुदाय है। इसका एक हिस्सा आहार-संग्रह अवस्था में है। शिकार, मधु, रेशम के कोये, रस्सी और फल तथा जंगली कन्दों पर इनकी जीविका आधारित है। जंगल साफ करके खेती द्वारा गांदेली, मडुआ, उरद, धान आदि पैदा कर लेते हैं।
- **अन्य :** खरवार, लोहरा, भूमिज और माहली भी प्रमुख जनजातिया हैं।

क्षेत्रीय कार्यालय, राँची द्वारा राजभाषा हिन्दी में की जा रही प्रगति की स्थिति

क्षेत्रीय कार्यालय, राँची हिन्दी भाषी क्षेत्र में अवस्थित है एवं राजभाषा अधिनियम के वर्गीकरण के अनुसार यह "क" क्षेत्र में आता है। इस कार्यालय मे ंभी हिन्दी कार्य का लक्ष्य शत्-प्रतिशत ही रखा गया है। इस कार्यालय में 10 कर्मी पदस्थापित हैं एवं इसके साथ ही 1 मैनेजमेन्ट ट्रेनी की भी सेवायें हमें प्राप्त हो रही हैं। इस तरह कुल 11 कर्मियों में 5 कर्मचारी हिन्दी भाषी एवं 6 कर्मचारी अहिन्दी भाषी हैं। उसमें से 6 अहिन्दी भाषी राजभाषा अधिनियम के अनुसार "ग" क्षेत्र से आते हैं। इस कार्यालय के अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण हिन्दी कार्यों के शत प्रतिशत लक्ष्य प्राप्ति के प्रति काफी गम्भीरता से प्रयासरत हैं एवं इस कार्य की प्रगति में कार्यालय के क्षेत्रीय प्रमुख श्री मधुकर डी. उगेमुगे की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है एवं सराहनीय है। उन्होंने इसे काफी गम्भीरता से लेते हुए कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने की प्रेरणा एवं नेतृत्व दिया है। इनके पास कार्यालय की कोई भी संचिका से संबंधित टिप्पण एवं पत्राचार हिन्दी में करने पर विशेष बल दिया जा रहा है और टिप्पण एवं पत्राचार हिन्दी में प्रस्तुत करने पर अनुमोदन हेतु विचार किया जाता है। इसके अलावा क्षेत्रीय प्रमुख महोदय द्वारा यह भी निर्देशित किया गया है कि यदि कोई भी पत्राचार अंग्रेजी में आता है तो इसका उत्तर हिन्दी में ही दिये जाने का यथा सम्भव प्रयास किया जाए।

क्षेत्रीय प्रमुख द्वारा हिन्दी प्रयोग की गम्भीरता से किये जा रहे प्रयासों का परिणाम है कि हिन्दी नोडल अधिकारी ने कार्यालय के सभी अधिकारी एवं कर्मचारियों को उक्त अनुपालन को गम्भीरता से लेने हेतु विनम्र आग्रह किया है और इस संबंध में अपने प्रयास को जारी रखा है जिसके परिणाम स्वरूप कार्यालय के सभी कर्मियों ने भी हिन्दी कार्यो की प्रगति को पूरी गम्भीरता से लिया है। हिन्दी कार्यों की प्रतिशत्ता को बढ़ाने में सभी कर्मियों ने तत्परता एवं हर सम्भव प्रयास करते हुए महत्वपर्णू योगदान दिया है जिसके फलस्वरूप क्षेत्रीय कार्यालय में हिन्दी कार्यों की प्रतिशत्ता निरन्तर चार वर्षों से शत्-प्रतिशत है।

हडको क्षेत्रीय कार्यालय, राँची द्वारा प्रत्येक वर्ष चारों तीमाहियों जनवरी-मार्च, अप्रैल-जून, जुलाई-सितम्बर एवं अक्टूबर-दिसम्बर में चार बार हिन्दी तिमाही बैठक-सह-कार्यशाला का आयोजन नियमित रूप से किया जा रहा है। प्रत्येक कार्यशाला में हिन्दी विद्वान या नराकास सदस्य कार्यालय के अधिकारियों को बतौर मुख्य अतिथि प्रशिक्षण हेतु आमंत्रित किया जाता है। इसके अतिरिक्त नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), राँची द्वारा वर्ष में दो बार अर्द्धवार्षिक बैठक जुलाई एवं दिसम्बर में आयोजित की जाती है, जिसमें क्षेत्रीय कार्यालय से क्षेत्रीय प्रमुख के साथ हिन्दी अधिकारी भी उक्त बैठक में नियमित रूप से उपस्थित होते हैं।

हडको क्षेत्रीय कार्यालय, राँची द्वारा नराकास (उपक्रम), अध्यक्ष कार्यालय, सी.एम.पी.डी.आई, राँची कार्यालय परिसर में हडको द्वारा दिनांक 25 अक्टूबर 2024 को आशुभाषण एवं दिनांक 26 अगस्त 2025 को शब्दावली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। नराकास (उपक्रम), राँची के सदस्य कार्यालयों के प्रतिनिधियों ने उक्त प्रतियोगिताओं में उपस्थित होकर प्रतियोगता में हिस्सा लिया एवं इन प्रतियोगिताओं में विजेताओं को हडको क्षेत्रीय कार्यालय, राँची द्वारा प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं सांत्वना पुरस्कार के अतिरिक्त प्रतिभागिता स्मृति चिन्ह (मेमेन्टोज) प्रदान किया गया।

(1) हडको क्षेत्रीय कार्यालय, राँची द्वारा नराकास (उपक्रम), अध्यक्ष कार्यालय, सी.एम.पी.डी.आई.,राँची के कार्यालय परिसर में दिनांक 25 अक्टूबर 2024 को आयोजित 'आशुभाषण प्रतियोगिता' का आयोजन

प्रतियोगिता में विजेताओं का विवरण निम्नवत है :-

(i) कर्मचारी राज्य बीमा निगम आदर्श अस्पताल, नामकुम, राँची की श्रीमती सीता कुमारी को प्रथम स्थान
(ii) गेल इंडिया लिमिटेड, राँची के श्री अभिषेक कुमार को द्वितीय स्थान और
(iii) मेकॉन लिमिटेड, राँची के श्री देवाशीष बोस ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

इसके अतिरिक्त गेल इंडिया, राँची के श्री शिवम सहाय को सांत्वना पुरस्कार प्राप्त करने में सफलता मिली।

निर्णायक मंडली द्वारा प्रतिभागिता पुरस्कार वितरण

2) हडको क्षेत्रीय कार्यालय, राँची द्वारा नराकास (उपक्रम), अध्यक्ष कार्यालय, सी.एम.पी.डी.आई., राँची के कार्यालय परिसर में दिनांक 26 अगस्त 2025 को आयोजित हिन्दी 'शब्दावली प्रतियोगिता' में विजेताओं का विवरण निम्नवत है :-

(i) रेल टेल, राँची के श्री अमित कुमार पाठक को प्रथम स्थान

(ii) मेकॉन लिमिटेड, राँची के श्री देवाशीष बोस ने द्वितीय स्थान और

(iii) सीसीएल राँची के श्री कुमार अविनाश ने तृतीय स्थान प्राप्त किया

इसके अतिरिक्त फुड कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड, राँची के सुश्री ईभ बिलुंग और सीएमपीडीआई, राँची के अमृतांश राय को सांत्वना पुरस्कार प्राप्त करने में सफलता मिली।

हडको क्षेत्रीय कार्यालय, राँची के सभी कर्मियों के राजभाषा हिन्दी प्रचार-प्रसार को गम्भीरता से लेते हुए इसे बढ़ाने हेतु किये गये उत्साह पूर्ण सराहनीय प्रयासों का फल है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), राँची द्वारा आयोजित अर्द्धवार्षिक बैठक दिनांक 29 जुलाई 2025 में 'नगर पुरस्कार योजना 2024-25 के अन्तर्गत हडको क्षेत्रीय कार्यालय, राँची को हिन्दी कार्यो के प्रति विशिष्ट योगदान के लिये तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

ना तुम आए ना धूप

श्रीमती शतरूपा दास
पत्नी-श्री बिप्लब कुमार दास
प्रबंधक (वित्त)

अरसे बीत गए,
ना तुम आए, ना धूप।
कब से डब्बे में सिल रही है कुछ नमकीन बातें,
दोष तुम्हारा नहीं, मौसम का है शायद।
जानते हो, कागज की जो कश्ती हम दोनो ने मिलकर बनाई थी,
वो मझधार में कहीं खो गई।
दोष कश्ती का नहीं, न ही बारिश का,
ना ही हमारा दोष किस्मत का होगा शायद।

भीगने के सौ बहाने बनाते थे पहले,
अब इंतजार होता है कब ये बारिश रूकेगी।
बारिश हमसे लिपटती थी, और हम तुमसे।
रिश्तों की वो गर्माहट....जाने कहाँ खो गई।
अब भींगना तो दूर, खिड़की से देख कर ही ठंड लगती है।
पता नहीं, पानी ज्यादा ठंडा होग या है... या हमारा रिश्ता।

अच्छा छोड़ो, पुराने मंदिर के पीछे, जो बरगद का पेड़ था, याद है ना तुम्हे ?
जहाँ हम झूला झूलते थे...
वो टहनी कब की टूटकर अलग हो गयी पेड़ से।
अब वो पेड़ और भी बूढ़ा हो गया है,
ठीक मेरी तरह, राह ताकते हुए तुम्हारे इंतजार में।
लेकिन फिर भी...
ना तुम आए, ना धूप।

राँची स्थित मनोरम पर्यटन स्थल

सुरेन्द्र कुमार सिंह
उप महाप्रबंधक (परियोजना)

झारखण्ड राज्य की राजधानी राँची अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिये प्रसिद्ध है। इस राज्य के हर कोने में एक से एक सुंदर प्राकृतिक दर्शनीय स्थल है। राँची शहर अपने में कई प्राकृतिक विरासत को समेटे हुए हैं। यहाँ देखने के लिए झरने, मंदिर, सुंदर दृश्य इत्यादि काफी कुछ है। पर्यटन के शौकीन और छुट्टी बिताने की योजना बना रहे लोगों के लिए राँची को एक पर्यटन विहार स्थल के रूप में चयन किया जा सकता हैं।

राँची में घूमने के स्थान : जगन्नाथ मंदिर, टैगोर हिल, पहाड़ी मंदिर, राजकीय संग्रहालय–होटवार, नक्षत्र वन, दशम जलप्रपात, जोन्हा जलप्रपात, पतरातु घाटी, हुंडरू जलप्रपात, बिरसा ज्युलॉजिकल पार्क, पंचघाघ झरना

1. **जगन्नाथ मंदिर, राँची :** राँची का जगन्नाथ मंदिर पुरी मंदिर के जैसा है। 17वीं सदी के इस मंदिर में हजारो पर्यटक आते हैं। यह शहर के लोकप्रिय स्थानों में से एक है। यहाँ आने का सबसे अच्छा समय रथ यात्रा के अवसर पर है। रथ यात्रा जून–जुलाई के महीने में आयोजित किया जाता है। इस मंदिर से आप शहर का खूबसूरत नजारा देख सकते हैं।

2. **राँची झील, राँची :** राँची झील या बड़ा तालाब शहर के बीच में स्थित है। इसका इतिहास है कि राँची झील की खुदाई 1842 में ब्रिटिश कर्नल ने की थी। एक शांत और सुकून भरा समय बिताने के लिए यह एक शानदार जगह है। झील से कुछ दूरी पर राँची पहाड़ी मंदिर है।

3. **कांके डैम, रॉक गार्डेन राँची :** रॉक गार्डेन राँची में सबसे अधिक देखे जाने वाले पर्यटन स्थानों में से एक है। यह गोंडा हिल की चट्टानों से निर्मित है और कांके बांध के द्वार पर एक छोटी पहाड़ी पर स्थित है। पहाड़ी के उपर से देखने पर यह और भी अधिक आकर्षक नजर आता है। बगीचे में छोटे झरने, सुंदर मूर्तिया हैं, जो पिकनिक का आनंद लेने के लिए एक सुंदर वातावरण बनाती है। कांके डैम

रॉक गार्डेन से सटा हुआ है। यहाँ दो स्थानों को एक साथ देखना खूबसूरत अहसास कराता है। शाम का समय और पिकनिक मनाने के लिए यह एक उम्दा जगह है।

4. **सूर्यमंदिर, राँची :** बुण्डू स्थित राँची का सूर्यमंदिर एक मनोरम जगह है। पहाड़ी की चोटी पर स्थित इस मंदिर का निर्माण विशिष्ट सूर्य मंदिर वास्तुकला में किया गया है। इस मंदिर में सफेद संगमरमर पत्थरों से निर्मित विशाल रथ की आकृति को दर्शाया गया है जो सात घोड़ों द्वारा खीचे जा रहे हैं। इस रथ में 18 पहिए लगे हैं। सूर्यदेव के अलावा इस मंदिर में कई अन्य हिन्दू देवी-देवताओं की मूर्तियों को रखा गया है। इस मंदिर के परिसर में एक तालाब भी है जिसे पवित्र माना जाता है।

5. **टैगोरहिल, मोरहाबादी, राँची :** टैगोरहिल का नाम महान कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर पर है। ऐसा माना जाता है कि उन्होंने यहाँ बहुत समय बिताया है। यह मोरहाबादी हिल के रूप में भी जाना जाता है। इस जगह में आप शहर के सुंदर दृश्यों और स्पष्ट नीले आसमान का आनंद ले सकते हैं। यह पहाड़ी मनोरम दृश्यों के लिए बहुत लोकप्रिय है। यहाँ आप रॉक क्लाइंबिंग और ट्रैकिंग का प्रयास कर सकते हैं। पहाड़ी के आधार पर रामकृष्ण मिशन आश्रम, कृषि वोकेशनल इंस्टीच्यूट और दिव्यायन केन्द्र है।

6. **पहाड़ी मंदिर, राँची :** पहाड़ी मंदिर शहर का सबसे शानदार जगह है। यह 2180 फीट की ऊँचाई पर स्थित है। यहाँ सालों भर शिवभक्तों की भारी भीड़ उमड़ती है। खासकर श्रावण महीने के दौरान यहाँ बहुत भीड़ होती है। मंदिर भक्तों के बीच पुजनीय है। ऐसा माना जाता है कि उनकी इच्छाएं पूरी करने के लिए यहाँ शक्तियाँ हैं। पहाड़ी स्थित मंदिर तक पहुँचने के लिए करीब 450 सीढ़ियां चढ़नी पड़ती है।

7. **राज्य संग्राहलय होटवार, राँची :** यह राँची संग्रहालय के रूप में जाना जाता है। राज्य संग्रहालय होटवार नृवंश विज्ञान प्रदर्शित करता है। यहाँ मौजूद हथियार और गोला बारूद, कलाकृतियां और आभूषण राज्य के इतिहास के बारे में बताती है। संग्रहालय में मूर्तिकला गैलरी है। इसमें स्थापत्य स्थलों के दिलचस्प चित्रों का संग्रह है। राज्य के इतिहास की यात्रा के प्रति उत्साही लोगों के लिए यह ज्ञान का केन्द्र है।

8. **नक्षत्र वन, राँची :** नक्षत्र वन एक पार्क है। यह राँची में गवर्नर हाउस (राज भवन) के सामने स्थित है। यह नक्षत्रों की अनूठी अवधारणा पर बनाया गया है। पार्क को विभिन्न वर्गों में विभाजित किया गया है। इनमें से प्रत्येक एक राशि चक्र और आकाशीय पिंडों का प्रतिनिधित्व करता है। हिंदु ज्योतिषियों का मानना है कि प्रत्येक नक्षत्र एक पेड़ से मेल खाता है जिसका औषधीय, सौंदर्य, सामाजिक और आर्थिक मूल्य है। संगीतमय फव्वारा और इसके आस-पास के सुंदर रास्ते पार्क की सुंदरता को बढ़ाते हैं।

9. **दशम जल प्रपात, राँची :** राँची शहर से लगभग 40 किलोमीटर की दूरी पर स्थित दशम फॉल झारखण्ड मे ंपर्यटकों के लिए सबसे लोकप्रिय स्थलों में से एक है। यह प्रकृति प्रेमियों के लिए एक खास जगह है। इस झरने की एक खासियत यह है कि जब यह अपनी अधिकतम महिमा पर होती है, तो आप पानी की 10 धाराओ ंको प्लंज पुल में गिरते हुए देख सकते हैं। धीरे-धीरे पर्यटन में वृद्धि के कारण यहाँ कई रेस्तरां और स्वच्छ टॉयलेट बनाए गए हैं। यहाँ की यात्रा पहले की तुलना में कहीं अधिक सुविधाजनक हो गई है। जंगल झाड़ के बीच सुरमई वातावरण में यहाँ कांची नदी का निर्मल जल 144 फीट की ऊँचाई से गिरती है। यह दृश्य भी मनोरम है।

10. **जोन्हा जल प्रपात, राँची :** जोन्हा पर्वत राँची शहर के लिए एक प्रतीक बन गया है। लुभावने रूप से सुंदर इस लटकती घाटी की पहली झलक अविस्मरणीय है। यहाँ आने के बाद इसकी यादें लंबे समय तक आपके साथ रहेगी। यहाँ हर दिन कई पर्यटकों द्वारा दौरा किया जाता है। यह अधिक भीड़ से दूर है और आप आसानी से किसी भी समय यहाँ का आनंद ले सकते हैं।

11. **पतरातु घाटी, राँची :** यदि आप लुभावनी और लंबी घुमावदार सड़कों से गुजरना चाहते हैं तो आपको पतरातु घाटी अवश्य आना चाहिए। यहाँ आकर आपकी छुट्टी परिपूर्ण बन जाएगी। राँची से घाटी तक ड्राइव हर वाईक प्रेमी के लिए खुशी का पल होता है। एस-टर्न, हेयर पिन और स्वूपिंग कॉर्नर और तेज स्वीविस्टा ड्राइव को और अधिक रोमांचित बनाते हैं। यहाँ पर अवस्थित डैम पर वोटिंग करना बहुत ही रोमांचक है। यह पिकनिक के लिए एक शानदार जगह है।

12. **हुंडरू फॉल, राँची :** भारत के 50 सबसे ऊँचे झरनों में से एक राँची के हुंडरू फॉल्स को अपने यात्रा कार्यक्रम का हिस्सा जरूर बनाना चाहिए। यह क्षेत्र अपने सुंदर वैभव के साथ पर्यटकों को आकर्षित करता है। यह राँची में घूमने के लिए सबसे लोकप्रिय स्थानों में से एक है।

13. **बिरसा जूलॉजिकल पार्क, राँची :** यदि आप बच्चों के साथ यात्रा कर रहे हैं तो बिरसा जुलोजिकल पार्क एक बेहतरीन जगह है। यह पार्क बाघ, शेर और हिरण सहित कई प्रकार के पशुओं के प्रजातियों का घर है। यदि आप एक वन्य जीव उत्साही हैं, तो आप यहाँ के वन्य जीवों के बारे में सभी प्रकार की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। आप यहाँ पशु गोद लेने का कार्यक्रम का हिस्सा बन सकते हैं। चिड़ियाघर मे ंप्रवेश द्वार पर एक छोटी सी कैंटीन है जो स्नैक्स और पेयजल परोसती है।

14. **पंचघाघ जलप्रपात, राँची :** राँची से 50 किमी दूर स्थित पंचघाघ जलप्रपात स्थानीय लोगों के बीच एक पसंदीदा स्थान है। यह पिकनिक स्थल के रूप में काफी लोकप्रिय है। झरने का नाम इस तथ्य से मिला है कि यहाँ से पाँच झरने गिरते देखे जा सकते हैं। यदि आप सप्ताह के अंत में यहाँ आते हैं, तो आप कई स्थानीय लोगों को सुंदरता और शांति का आनंद लेते हुए देखेंगे।

जलवायु परिवर्तन: हमारे ग्रह के लिए एक बढ़ता हुआ खतरा

श्री सुभेन्दु घोष
उप महाप्रबंधक (विधी)

जलवायु परिवर्तन आज मानवता के सामने आनेवाली सबसे गंभीर चुनौतियों में से एक है। यह केवल एक पर्यावरणीय मुद्दा नही है बल्कि एक बहुआयामी संकट है जो वैश्विक स्तर पर पारिस्थिति की तंत्रों, अर्थव्यवस्थाओं और समाजो को प्रभावित करता है।

जलवायु परिवर्तन का तात्पर्य पृथ्वी पर तापमान और मौसम के पैटर्न में दीर्घकालिक परिवर्तन से है। जबकि जलवायु स्वाभाविक रूप से समय के साथ बदलता रहता है, जो तेज जलवायु परिवर्तन अब अनुभव कर रहे हैं, वह मुख्य रूप से मानव गतिविधियों के कारण है।

वैज्ञानिकों के अनुसार 20वीं शताब्दी के मध्य से देखे गए वैश्विक तापमान वृद्धि के रूप को "ग्रीन हाउस प्रभाव" के मानव विस्तार से जोड़ा जाता है। वह गर्मी तब होती है जब वायुमंडल पृथ्वी से अंतरिक्ष की ओर निकलने वाली गर्मी को फंसा लेता है। पृथ्वी पर जीवन सूर्य से आनेवाली ऊर्जा पर निर्भर करता है। लगभग आधी प्रकाश ऊर्जा जो पृथ्वी के वायुमंडल तक पहुँचती है, हवा और बादलों के माध्यम से सतह तक पहुँचती है, जहाँ इसे अवशोषित किया जाता है और अवरक्त गर्मी के रूप में विकिरित किया जाता है। इसके बाद इस गर्मी का लगभग 90 प्रतिशत ग्रीन हाउस गैसों द्वारा अवशोषित किया जाता है और पुनः विकसित किया जाता, जिससे अंतरिक्ष में गर्मी की हानि धीमी हो जाती है।

ग्रीन हाउस गैसों की वृद्धि के कारण कार्बन डाइ-ऑक्साइड (CO_2) और मीथेन (CH_4) जोवायु मंडल में छोड़ी जाती है, जो गर्मी को फैलाती है, जिससे वैश्विक तापमान बढ़ता है, जो पारिस्थिति की तंत्र को बाधित करता है, ध्रुवीय (Polar) बर्फ के आवरण पिघलाता है, समुद्र स्तर को बढ़ाता है, तुफानों को तीव्र करता है और विभिन्न क्षेत्रों में सूखे का कारण बनता है। असल में,जलवायु परिवर्तन हमारे ग्रह के पर्यावास के नाजुक संतुलन को बदल रहा है। यह केवल प्रकृति को नहीं प्रभावित करता है बल्कि मानव स्वास्थ्य, अर्थव्यवस्थाओं और बुनियादी ढांचे को भी प्रभावित करता है। इससे निपटने के लिए वैश्विक स्तर पर सामूहिक कार्रवाई की आवश्यकता है।

मुख्य रूप से जीवाश्म ईंधन (fossil fuel) जलाने, वनों की कटाई और औद्योगिक प्रक्रियाओं जैसी मानव गतिविधियों द्वारा संचालित, जलवायु परिवर्तन ने अभूतपूर्व वैश्विक तापमान वृद्धि और पर्यावरणीय व्यवधानों का कारण बना है।

जलवायु परिवर्तन के प्रमुख खतरे निम्नलिखित है :-

बढ़ती तापमान : वैश्विक तापमान पहले ही औद्योगिक क्रांति के बाद से लगभग$1.2^{o}C$ बढ़ चुका है। तत्काल कार्रवाई के बिना, यह वृद्धि अगले कुछ दशकों के भीतर $1.5^{o}C$-$2^{o}C$ के महत्वपूर्ण सीमा को पार कर सकते हैं। उच्च तापमान लू, सूखे और जंगल की आग को और बढ़ा देते हैं, मानव स्वास्थ्य और जैव विविधता के लिए खतरा बनाते हैं। भारत

का औसत तापमान 1901 और 2018 के बीच लगभग $0.7^{o}C$ बढ गया है। इससे अधिक बार और तीव्र गर्मी की लहरें आई हैं, जिन्होंने स्वास्थ्य संबंधी समस्याए पैदा की हैं और कृषि उत्पादकता को कम किया है।

बर्फ पिघलने वाले ध्रुवीय क्षेत्र और बढ़ते समुद्र स्तर : आर्कटिक और अंटार्कटिक क्षेत्र शेष विश्व की तुलना में दोगुनी गति से गर्म हो रहे हैं। पिघलते ग्लेशियर और बर्फ की चादरें समुद्र स्तर को बढ़ाने में योगदान देती है, जो तटीय शहरों और निम्न भूमिवाले देशो को खतरे में डालती है। यह घटना ताजे पानी की आपूर्ति को भी बाधित करती है, जिससे अरबों लोगों के लिए जल संकट उत्पन्न होता है।

अत्यधिक मौसम की घटनाएँ : जलवायु परिवर्तन तूफानों, चक्रवातों और बाढ़ को तेज करती है, जिसमें व्यापक विनाश होता है। सूखे और जंगल की आग ने ऑस्ट्रेलिया, कैलिफोर्निया और अमेजन वर्षावन जैसे क्षेत्रों को तबाह कर दिया है, जबकि अत्यधिक वर्षा ने एशिया तथा यूरोप जैसे स्थानों पर भयानक बाढ़ का कारण बना है।

मनुष्यों के लिए खतरे : जलवायु परिवर्तन खाद्य और जल असुरक्षा को बढ़ाता है, विशेष रूप से कमजोर क्षेत्र में। यह बुनियादी ढांचे, स्वास्थ्य और आजीविका के लिए भी जोखिम उत्पन्न करता है, जिससे यह मानव के लिए एक गंभीर खतरा बन जाता है।

हिमालय के ग्लेशिरों का आकार सिकुड़ रहा है। यह घट रहा है जो बढ़ती तापमान के कारण हो रहा है, जिससे गंगा और ब्रह्मपुत्र जैसी प्रमुख नदियों के प्रवाह को खतरा है। भारत जल संकट और अत्यधिक वर्षा का सामना कर रहा है। मानसून के पैटर्न असामान्य हो गए हैं, पिछले वर्षों में अत्यधिक वर्षा की घटनाएं बढ़ गई हैं।

जलवायु परिवर्तन खाद्य सुरक्षा को प्रभावित करता है। उदाहरण के लिए गर्मी की लहरों ने खाद्य उत्पादन को तबाह कर दिया है जिससे भारत को निर्यात पर प्रतिबंध लगाने के लिए मजबूर होना पड़ता है।

आगे का मार्ग : जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए तत्काल और सामूहिक कार्रवाई की आवश्यकता है। सरकारों, व्यापारों और व्यक्तियों को एक साथ कार्य करके ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन को कम करना, नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों की ओर संक्रमण करना और सतत प्रथाओं को अपनाना होगा। प्राकृतिक पारिस्थितिक तंत्र की रक्षा करना और उन्हें पुनर्स्थापित करना भी जलवायु प्रभावों को कम करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

जलवायु परिवर्तन से लड़ने के लिए एक बहु–आयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता है। सरकार को कार्बन उत्सर्जन को कम करने, जंगलों की सुरक्षा करने और नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा देने के लिए कानून और विनिमय लागू करने चाहिए, स्वच्छ ऊर्जा और ऊर्जा–कुशल प्रौद्योगिकियों में नवाचार का समर्थन करना चाहिए और संरक्षण प्रयासों को बढ़ाना और क्षीण वन क्षेत्रों में पुनर्वनीकरण करना चाहिए।

व्यावसायिक संस्थाओं को नवीकरणीय ऊर्जा से संचालन को शक्ति देनी चाहिए और ऊर्जा दक्षता में सुधार करना चाहिए, अनिवार्य वनीकरण की दिशा में निवेश करना चाहिए, सतत विकास की ओर आगे बढ़ना चाहिए।

व्यक्तिगत स्तर पर, लोगों को ऊर्जा सक्षम उपकरणों का उपयोग करने, एलईडी बल्बों में स्विच करने और जब उपयोग में न हो उपकरणों को अनप्लग करने, नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का उपयोग करने और सतत विकास के लिए विकल्प चुनने की जिम्मेदारी लेनी चाहिए।

भारत मेरी माँ को पत्र-2047 मेरे सपनों का विकसित भारत

श्री संजॉय मिश्रा
प्रबंधक (आई.टी.)

प्रिय भारत माता,

मैं यह पत्र एक संतान और एक नागरिक के रूप में लिख रहा हूँ – आपकी यात्रा पर गर्व करते हुए और भविष्य के प्रति आशा से भरा हुआ, क्योंकि आप 2047 में अपनी स्वतंत्रता की 100 वीं वर्ष की ओर बढ़ रही हैं। अपने इतिहास की सबसे कठिन बाधाओं को पार किया है और अद्भुत उपलब्धियाँ हासिल की है। अब आप विश्व के सबसे उन्नत, सहिष्णु और सम्मानित देशों में से एक बनने के कगार पर हैं।

मैं भारत में केवल आँकड़ों से नहीं, बल्कि बदली हुई जिंदगियों में प्रगति देखता हूँ। सिर्फ मात्रा बढ़ाना नहीं, बल्कि सभी के लिए बेहतर भविष्य बनाना अधिक महत्वपूर्ण है। आधुनिक बुनियादी ढाँचा, मजबूत अर्थव्यवस्था, ज्ञान की स्पष्टता और न्याय तथा मानवता में जड़े जमाए हुए सिद्धांत–यही एक मध्य विकसित भारत की पहचान है।

मैं एक ऐसे भारत की कल्पना करता हूँ जहाँ शीर्ष स्तरीय बुनियादी ढाँचा हर कोने को जोड़ता है–तटीय कस्बों से लेकर सुदूर गाँवों तक, उत्तर–पूर्वी पहाड़ियों से लेकर पश्चिमी रेगिस्तानों तक। बुलेट ट्रेनें बड़े शहरों को जोड़ती है, ग्रामीण सड़कों की उम्र लंबी है और इलेक्ट्रिक बसें स्वच्छ सड़कों पर शांति से दौड़ती हैं। हर गांव डिजिटल रूप से जुड़ा है और प्रत्येक नागरिक को सार्वजनिक सेवाएँ, स्वच्छ जल, बिजली और स्वच्छता सुविधाएँ प्रोद्योगिकी–सक्षम तंत्रों के माध्यम से प्राप्त होती है।

2047 में हमारी अर्थव्यवस्था आत्म निर्भर, जीवंत और वैश्विक स्तर पर सम्मानित है। हम डिजिटल सेवाओं, कृत्रिम बुद्धिमता, अंतरिक्ष, प्रौद्योगिकी, हरित ऊर्जा और उन्नत निर्माण में अग्रणी है। "मेड इन इंडिया" अब केवल एक लेबल नहीं, बल्कि उत्कृष्टता, नैतिकता और नवाचार का वादा है। पारंपरिक उद्योग, स्टार्टअप और एमएसएमई अब फल–फूल रहे हैं। हमारे निर्माण को केवल मात्रा नहीं, बल्कि उत्पादों, जानकारी और विचारों के मूल्य द्वारा संचालित किया जाता है।

कृषि बदल गई है। हमारे किसान बाजारों, स्मार्ट उपकरणों और आधुनिक सिंचाई तक पहुँच रखते हैं। वे सटीक कृषि, सेंसर–आधारित मृदा निगरानी और AI आधारित मौसम पूर्वानुमान के माध्यम से टिकाऊ और उच्च गुणवत्ता वाली फसलें उगाते हैं। प्राकृतिक और जैविक कृषि को प्रोत्साहन मिलता है। अब किसान सीधे निर्यात करते हैं और बिचौलियों के बिना सम्मान जनक जीवन बसर करते हैं।

भविष्य में शिक्षा हर परिवार की ताकत और हर बच्चे का अधिकार होगी। स्कूल अब सिर्फ रटने के बजाय सोचने, रचने और अनुकूलन करना सिखाते हैं। शिक्षा अनुभवात्मक, बहुभाषी और व्यावहारिक है। शिक्षक और छात्र दोनों को डिजिटल उपकरणों से समान रूप से लाभ होता है। शिक्षा में कौशल विकास शामिल है, जो छात्रों को जैव प्रौद्योगिकी, रोबॉटिक्स, अंतरिक्ष विज्ञान और सामाजिक उद्यमिता जैसे भविष्य के क्षेत्रों के लिए तैयार करती है।

ग्रामीण और गरीब लोगों की अब स्वास्थ्य सेवाओं की चुनौतियों का सामना नहीं करना पड़ता। सभी नागरिकों को सस्ती और उच्च गुणवत्ता वाली स्वास्थ्य सेवा उपलब्ध है। हमारी स्वास्थ्य प्रणाली रोगी–केंद्रीय और डिजिटल–प्रथम

है–ग्रामीण क्षेत्रों में टेली मेडिसिन से लेकर शहरी क्षेत्रों में उन्नत निदान तक। हमने टीकों के विकास और चिकित्सा अनुसंधान में महत्वपूर्ण प्रगति की है। मानसिक स्वास्थ्य से जुड़े कलंक तब नहीं रहे, और इसके लिए भरपूर समर्थन उपलब्ध है।

भारत की रक्षा सेनाएँ अब पूरी तरह स्वदेशी, अत्याधुनिक और सुसज्जित है। हम अपने निगरानी तंत्र, पनडुब्बियों और लड़ाकू विमानों का निर्माण स्वयं करते हैं। हमारे पास विश्व का श्रेष्ठ साइबर सुरक्षा है और हमारी सेवाएँ सुरक्षित है। हम साइबर स्पेस में मजबूत एन्क्रिप्शन, सुरक्षित डिजिटल प्रणाली और मौलिक AI के साथ मानक स्थापित करते हैं–जो सिर्फ डेटा नहीं, विश्वास की भी रक्षा करता है।

हर क्षेत्र में महिलाएँ अग्रिम पंक्ति में हैं। वे व्यापार की नवोन्मेषक, सेना की रक्षक, सरकार में नेता और विज्ञान की अग्रदूत हैं। हर लड़की को बचपन से यह सिखाया जाता है कि उसे हर अवसर का अधिकार है। सशक्त कानूनी सुरक्षित सार्वजनिक स्थलों और समान प्रतिनिधित्व के चलते अब लैंगिक समानता एक वास्तविकता है, केवल वादा नहीं।

गलत विकास अब केवल चर्चा का विषय नहीं, बल्कि जीवन का तरीका है। सौर, पवन और हरित हाइड्रोजन से घर और उद्योग संचालित होते हैं–हम अक्षय ऊर्जा के वैश्विक नेतृत्व के लिए प्रयासरत्न हैं। हमारे शहर सर्कुलर इकॉनमी के मॉडल पर आधारित है। हरियाली बढ़ती है, कपड़ा कुशलता पूर्वक रिसाइकल होता है, और सार्वजनिक परिवहन इलेक्ट्रिक है। यमुना और गंगा फिर से निर्मल बहती है। वनीकरण और वन्य जीव संरक्षण राष्ट्रीय प्रयास है।

2047 में भारत एक प्रमुख आर्थिक शक्ति होने के साथ–साथ विकास, कुटनीति और जलवायु परिवर्तन की कार्रवाई में भी वैश्विक नेतृतव कर्त्ता है। हम अंतर्राष्ट्रीय निर्णय लेने वाले संगठनों में निरंतर भागीदारी निभाते हैं। हमारी विदेश नीति शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व और पारस्परिक सम्मान पर आधारित हैं। हम बल के बजाय व्यापार, शिक्षा, प्रौद्योगिकी और मानवीय सहायता के माध्यम से साक्षेदारी करते हैं।

हम नवाचार के वैश्विक केन्द्र बन चुके हैं। भारतीय अनुसंधान संस्थान और विश्वविद्यालय विश्व के श्रेष्ठ संस्थाओं में शामिल है। हमारे अंतरिक्ष मिशन चंद्रमा से आगे बढ़ चुके हैं। इसरो निजी कंपनियों और अंतराष्ट्रीय संस्थाओं के साथ मिलकर नैतिक और किफायती अंतरिक्ष अन्वेषण करता है। हम राज्य विकासशील देशों को सस्ती अनुसंधान और उपग्रह प्रक्षेपण सेवाएँ प्रदान करते हैं।

हमारी सबसे बड़ी शक्ति है–हमारो युवा वर्ग। वे आत्मविश्वासी, ज्ञानी और नैतिक हैं, और राष्ट्र को आगे बढ़ाते हैं। खेल राष्ट्रीय प्राथमिकता है, और हम शतरंज, एथलेटिक्स, क्रिकेट, ओलंपिक और अन्य खेलों में श्रेष्ठता प्राप्त करते हैं। फिटनेस हमारी संस्कृति का हिस्सा है, हर स्कूल में खेल सुविधाएँ हैं।

हम अपनी विरासत और संस्कृति को भी संजोते हैं। दुनियाभर से पर्यटक यहाँ योग, शास्त्रीय कला, त्यौहारों और भोजन का अनुभव लेने आते हैं, केवल स्मारक देखने नहीं। हमारी भाषाऐं और परंपराएँ गर्व से फलती–फूलती है और हमारे कलाकार, फिल्म निर्माता पूरी दुनिया को भारत की कहानी सुनाते हैं।

और सबसे बढ़कर, मैं एक समावेशी, करूणाशील और समान भारत की कल्पना करता हूँ जहाँ जाति, लिंग, धर्म या भूगोल के आधार पर भेदभाव न हो। जहाँ तकनीक बाँटे नहीं, जोड़े। जहाँ विकास सिर्फ महानगरों तक सीमित न होकर छोटे गाँवों तक पहुँचे। जहाँ हर नागरिक को सुना जाए, सम्मान मिले और वह सुरक्षित महसूस करे, नेतृत्व जवाब देह हो और प्रगति सतत हो।

माँ भारत, हमने भले ही बहुत प्रगति कर ली हो, पर राह अभी भी लंबी है। हम स्वतंत्र हैं क्योंकि आप थीं, अब हमारी बारी है कि हम आपको ऐसा भविष्य दे जो स्वतंत्रता के योग्य हो।

आपका सपूत।

टीबी रोग उन्मूलन पर 100 दिवसीय सघन अभियान

हडको क्षेत्रीय कार्यालय, राँची द्वारा टीबी उन्मूलन पर निम्नलिखित गतिविधियाँ सम्पन्न की गई।

1. राँची क्षेत्रीय कार्यालय के सभी कर्मियों ने स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के टीबी मुक्त भारत विषय पर ऑनलाइन शपथ ली गई।
2. राँची क्षेत्रीय कार्यालय ने टीबी रोग उन्मूलन पर सभी कर्मचारियों को संवेदनशील बनाने और कार्यालय के आगंतुकों के बीच जागरूकता बढ़ाने के लिए कार्यालय परिसर में आईईसी सामग्री प्रदर्शित की गई।
3. टीबी उन्मूलन के विषय में जागरूकता बढ़ाने हेतु एवं इस विषय पर व्याख्यान देने के लिए राँची क्षेत्रीय कार्यालय ने स्वास्थ्य विभाग, झारखण्ड सरकार से चिकित्सक को कार्यालय परिसर में दिनांक 11 फरवरी 2025 को अपराह्न में आमंत्रित किया। चिकित्सा विशेषज्ञ ने अपने विचार एवं प्रेजन्टेशन के माध्यम से टीबी रोग के बारीकियों से अवगत कराया और टीबी क्या है ? इसके प्रकार, यह कैसे फैलता है, इसका उपचार, भारत सरकार द्वारा अब तक की गई विभिन्न पहलूओं आदि पर बहुमूल्य जानकारी साझा की। इस व्याख्यान से राँची क्षेत्रीय कार्यालय के सभी कर्मी सम्मिलित हुए एवं लाभ उठाया।

स्वच्छता ही सेवा 2024

हडको राँची क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा सीएसआर के अंतर्गत दिनांक 05 अक्टूबर 2024 (शनिवार) को ''सफाई मित्र सुरक्षा शिविर'' का आयोजन किया गया। उक्त कार्यक्रम का आयोजन हिनू, बस्ती, अखरा, वार्ड सं. 42, राँची नगर निगम क्षेत्र में पूर्वाह्न में किया गया इस। अवसर पर सफाई कर्मियों के लिए सुरक्षा गियर और सफाई उपकरण का वितरण के साथ-साथ स्वास्थ्य निवारक जाँच शिविर का भी आयोजन किया गया।

सुरक्षा मित्र सुरक्षा शिविर : कार्यक्रम का शुभारंभ श्री विश्वजीत सोय, क्षेत्रीय प्रमुख द्वारा किया गया। उन्होंने सेवाकर्मियों द्वारा हिनू में स्वच्छता बनाए रखने के लिए उनकी अटूट सेवा की प्रशंसा की। सेवाकर्मियों द्वारा साल भर मौसम की परवाह किये बिना कॉलोनी की साफ-सफाई में निःसवार्थ भाव से की गई सेवा किसी पुण्य कार्य करने से भी ज्यादा महत्वपूर्ण है। सड़कों की साफ-सफाई हो या बजबजाते नालियों की सफाई या कूड़ों की ढ़ेर हो, हरेक कार्य में लग्न से कार्य करना ही इन की सफलता की निशानी है। अपने बाल-बच्चों की चिंता, बुढ़े माँ-बाप का ख्याल से भी दूर रह कर सुबह से ही अपने मोहल्ले की सफाई में जुट जाना इनकी दिनचर्या है।

क्षेत्रीय प्रमुख के सम्बोधन के बाद कुछ सफाई कर्मियों ने भी अपने विचार रखे। समाज के लोगों और राज्य सरकार द्वारा उन्हें उचित सम्मान नहीं मिलने की शिकायत की। उनको रोज अपने कार्यों को समुचित ढंग से करने के लिए उचित उपकरण नहीं दिए जाने पर अपनी व्यथा सुनाई। झाडू, बेलचा, कुड़े उठाने के उपकरण, नाली सफाई करने के औजार, पहनने के लिए सेफ्टी किट इत्यादि जरूरी सामन समय पर उपलब्ध नहीं हो पाने की शिकायात की।

स्वास्थ्य शिविर का आयोजन : इस अवसरपर एक स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर जिला आयुष केंद्र, झारखण्ड सरकार, डोरंडा से डॉक्टरों की टीम भी सफाई कर्मियों, उनके परिजनों एवं कॉलोनी के नागरिकों के स्वास्थ्य जाँच किया गया। नागरिकों की स्वास्थ्य जाँच के साथ ही आवश्यक परामर्श, मुफ्त में दवाइयाँ भी वितरण की गई। इस कार्यक्रम की सफलता में जिला केंद्र, डोरंडा से डॉक्टरों की टीम का अभुतपूर्व समर्थन मिला जिन्होंने अल्प सूचना मिलने पर भी इस आयोजन में सहर्ष अपनी महती भागीदारी निभाई।

सभा स्थल पर बैनर एवं पोस्टर लगाकर सफाई मित्र सुरक्षा शिविर एवं सुरक्षा गियर के वितरण हेतु, कार्यक्रम के प्रचार एवं इसके उद्देश्यों के बारे में व्यापक प्रसार एवं जन भागीदारी की अहमियत को प्रदर्शित किया गया। वार्ड संख्या 42 के सुपरवाईजर, गणमान्य सदस्यगण, सफाई कर्मियों, हडको के पदाधिकारीगण एवं नागरिकों की उपस्थिति में साफ-सफाई की महता के बारे में आवश्यक सुझाव एवं इसकी उपयोगिता के बारे में जनमानस में जागरूकता बढ़ाने एवं जनभागीदारी से इसकी लोकप्रियता को घरों तक पहुँचाने, स्वभाव एवं संस्कार के प्रति आदर भाव एवं जिम्मेदारी और भागीदारी से स्वच्छता को अपने जीवन में समाहित करने के बारे में आवश्यक सुझाव दिया गया।

कार्यक्रम के अंत में सफाई कर्मियों को एक-एक सुरक्षा गियर और सफाई उपकरण (कुदाल, बेलचा, रेडियम जैकेट, सेफ्टीकैप, ग्लोवस, सेफ्टी जूते एवं हैन्डकार्ट) का वितरण किया गया। इस शिविर में कुल 40 कर्मियों को सुरक्षा गियर का वितरण किया गया। शिविर की समाप्ति श्री सुरेन्द्र कुमार सिंह, उप महाप्रबंधक (परियोजना) के धन्यवाद ज्ञानोपरांत की गयी।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस, 2025

हडको क्षेत्रीय कार्यालय, राँची में अंतराष्ट्रीय महिला दिवस, 2025 का आयोजन किया गया। इस अवसर को मनाने के लिए, कार्यालय पुरूष कर्मियों की पत्नियां एवं क्षेत्रीय कार्यालय में कार्यरत महिला कर्मी कार्यालय में एकत्रित हुई। सभी प्रतिभागियों ने अंतराष्ट्रीय महिला दिवस पर अपने विचार साझा किए एवं अन्य गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लिया। क्षेत्रीय प्रमुख महोदय ने लैंगिक समानता को बढ़ावा देने में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के महत्व पर प्रकाश डाला और समाज के विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं की उपलब्धियों का संज्ञान लिया।

वार्षिक खेल दिवस 2024-2025 का आयोजन

हडको क्षेत्रीय कार्यालय, राँची द्वारा दिनांक 12 जनवरी 2025 को वार्षिक खेल दिवस-2025 का आयोजन किया गया। इस अवसर पर क्षेत्रीय कार्यालय के कर्मी एवं उनके परिवार के सदस्यों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

खेल दिवस के अवसर पर फुटबॉल मैच का आयोजन किया गया जिसमें राँची क्षेत्रीय कार्यालय के कर्मियों एवं उनके बच्चों ने फुटबॉल मैच का भरपूर आनन्द लिया एवं विजेता टीम को पुरस्कार दिया गया।

वार्षिक खेल दिवस के दौरान रस्साकशी का भी आयोजन किया गया। रस्साकशी में पुरूषों, महिलाओं एवं उनके बच्चों को शामिल कर प्रतियोगिता किया गया। इस प्रतियोगिता में विजयी टीम को पुरस्कार दिया गया। इसके अलावा खेल दिवस के दौरान क्रिकेट, बैडमिंटन इत्यादि खेल का आयोजन किया गया जिसमें सभी प्रतिभागियों ने खेल का भरपूर आनन्द लिया।

क्षेत्रीय प्रमुख श्री मधुकर डी उगेमुगे द्वारा अपने सम्बोधन में यह बताया गया कि कार्यालय द्वारा प्रत्येक वर्ष खेल दिवस मनाये जाने से कर्मियों एवं उनके आश्रितों को नियमित दिन-चर्या से अलग एक माहौल मिलता है जिससे कर्मियों एवं उनके आश्रितों के मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य में नया संचार होता है। तद्पोरांत इस खेल दिवस का समापन क्षेत्रीय प्रमुख एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा विजेताओं के बीच पुरस्कार वितरण कर किया गया।

हडको सीएसआर अंतर्गत झारखण्ड में किये गये कार्य

हडको सी.एस.आर. अंतर्गत स्कूल फर्नीचर का वितरण

हडको क्षेत्रीय कार्यालय, राँची ने झारखण्ड के चौदह जिलों में हडको सीएसआर पहल के तहत सीएम स्कूल ऑफ एक्सीलेंस (गर्ल्स) में सेल्फ के साथ 420 इंटीग्रेटेड डेस्क बेंच वितरित किए गए। इन चौदह जिलों में से जामताड़ा को छोड़कर तेरह आकांक्षी जिले हैं और सभी चौदह स्कूल गर्ल्स स्कूल हैं। ये सभी स्कूल पहले 'झारखण्ड बोर्ड' स्कूल थे और दो साल पहले इन्हें 'सीबीएसई' बोर्ड स्कूलों में बदल दिया गया और उनका नाम बदल कर सीएम स्कूल ऑफ एक्सीलेंस कर दिया गया है। ये सभी स्कूल स्मार्ट क्लास रूम उपकरणों से लैस हैं, लेकिन कुछ क्लास रूम में डेस्क और बेंच दयनीय स्थिति में थे। जिन स्कूलों में ये डेस्क उपलब्ध कराए गए हैं वे स्कूल निम्नानुसार हैं :-

अ. क्र.	विद्यालय का नाम	जिले की स्थिति
1.	सीएम स्कूल ऑफ एक्सीलेंस गर्ल्स, सिमरिया, चतरा	आकांक्षी जिला
2.	सीएम स्कूल ऑफ एक्सीलेंस गर्ल्स, दुमका	आकांक्षी जिला
3.	सीएम स्कूल ऑफ एक्सीलेंस गर्ल्स, गोड्डा	आकांक्षी जिला
4.	सीएम स्कूल ऑफ एक्सीलेंस गर्ल्स, गुमला	आकांक्षी जिला
5.	सीएम स्कूल ऑफ एक्सीलेंस गर्ल्स, जामताड़ा	गैर आकांक्षी जिला
6.	सीएम स्कूल ऑफ एक्सीलेंस गर्ल्स, लातेहार	आकांक्षी जिला
7.	सीएम स्कूल ऑफ एक्सीलेंस गर्ल्स, पलामू	आकांक्षी जिला
8.	सीएम स्कूल ऑफ एक्सीलेंस गर्ल्स, रामगढ	आकांक्षी जिला
9.	सीएम स्कूल ऑफ एक्सीलेंस गर्ल्स, पाकुड	आकांक्षी जिला
10.	सीएम स्कूल ऑफ एक्सीलेंस गर्ल्स, सिमडेगा	आकांक्षी जिला
11.	सीएम स्कूल ऑफ एक्सीलेंस गर्ल्स, राँची	आकांक्षी जिला
12.	सीएम स्कूल ऑफ एक्सीलेंस गर्ल्स, प. सिंहभूम (चाईबासा)	आकांक्षी जिला
13.	कस्तूरबा गांधी बालिक विद्यालय, गढ़वा	आकांक्षी जिला
14.	कस्तूरबा गांधी बालिक विद्यालय, खूंटी	आकांक्षी जिला

हडको ने गर्ल्स स्कूल में प्रदान किये बेंच-डेस्क

दुमका नगर. अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर दुमका के सीए
ऑफ़ एक्सीलेंस गर्ल्स में कार्यक्रम आयोजित किया गया. इसमें हुड
सीएसआर के तहत स्कूल को 30 बेंच-डेस्क प्रदान किए गए. हु
अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के मौके पर अपनी सामाजिक जिम्मेदारी नि

हुडको कंपनी के द्वारा एक्सीलेंस गर्ल्स स्कूल को 30 बेंच डेस्क प्रदान किए

दुमका, प्रतिनिधि। दुमका के सीएम स्कूल ऑफ़ एक्सीलेंस गर्ल्स में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में हडको कंपनी के द्वारा

राँची क्षेत्रीय कार्यालय, द्वारा हडको सी.एस.आर. अंतर्गत झारखण्ड के पाँच स्कूलों में 3 स्टेज UV फिल्टर युक्त वॉटर कूलर (80 लीटर) प्रदान किया गया।

एस.एस. डोरंडा गर्ल्स स्कूल, डोरंडा, राँची

कोल्हान एडुकेशन एंड चेरीटेबल सोसाइटी, चाईबासा

क्षितिज डेफ एंड डंब स्कूल, निवारणपुर, राँची

महेश्वरी गर्ल्स स्कूल, अशोक नगर, राँची

हडको सी.एस.आर. पहल के तहत क्षेत्रीय कार्यालय, राँची द्वारा झारखण्ड के सदर अस्पतालों में 120 ली. क्षमता वाले थ्री स्टेज यू वी फिल्ट्रेशन वाटर कूलर वितरण किया गया।

अ. क्र.	विद्यालय का नाम	जिले की स्थिति
1.	सदर अस्पताल, बोकारो	आकांक्षी जिला
2.	सदर अस्पताल, चतरा	आकांक्षी जिला
3.	सदर अस्पताल, दुमका	आकांक्षी जिला
4.	सदर अस्पताल, पूर्वी सिंहभूम	आकांक्षी जिला
5.	सदर अस्पताल, हजारीबाग	आकांक्षी जिला
6.	सदर अस्पताल, जामताड़ा	गैर आकांक्षी जिला
7.	सदर अस्पताल, लोहरदगा	आकांक्षी जिला
8.	सदर अस्पताल, पलामू	आकांक्षी जिला

सदर अस्पताल, बोकारो

सदर अस्पताल, चतरा

सदर अस्पताल, पूर्वी सिंहभूम

सदर अस्पताल, पलामू

सी.एस.आर. अंतर्गत हडको क्षेत्रीय कार्यालय राँची द्वारा राजेन्द्र इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस (RIMS) राँची, झारखण्ड को एडवांस लाइफ सुविधा युक्त एम्बुलेन्स सहित इनबिल्ड 38 मेडिकल उपकरणों के साथ 30 हाईड्रोलिक स्ट्रेचर प्रदान किये गये।

हडको का 55वां स्थापना दिवस, 2025

क्षेत्रीय प्रमुख दीप प्रज्वलित कर
कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस, 2025

सतर्कता जागरूकता सप्ताह, 2025

''सतर्कता जागरूकता सप्ताह'' के अवसर पर शपथ लेते कार्यालय के कर्मीगण

''सतर्कता जागरूकता सप्ताह'' के अवसर पर ''सत्यनिष्ठा की संस्कृति से राष्ट्र की समृद्धि'' विषय पर कर्मियों के बीच भाषण

''सतर्कता जागरूकता सप्ताह'' के अवसर पर आमंत्रित मुख्य अतिथि ''श्री अर्जुन मुन्दुईया'' पूर्व चीफ मेकेनिकल इंजीनियर, साउथ सेन्ट्रल रेलवे, कर्मियों के बीच व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए

''सतर्कता जागरूकता सप्ताह'' के अवसर पर आम जन के बीच ''वाकथन प्रतियोगिता'' का आयोजन किया गया

विश्व पर्यावरण दिवस, 2025

आजादी का अमृत महोत्सव ''हर घर तिरंगा'' 2025

हडको क्षेत्रीय कार्यालय राँची के व्यापार संचालन का संचयी प्रदर्शन

अ.क्र.	विवरण	राशि /संख्या
1.	स्वीकृत योजनाएं (आवासीय /शहरी अधोसंरचना)	131
2.	पूर्ण की गई याजनाओं की संख्या	34
3.	सम्मिलित शहरों की संख्या	16
4.	सम्मिलित संस्थाओं की संख्या	52
5.	परियोजना लागत (राशि करोड़ में)	10261.91
6.	स्वीकृत ऋण(राशि करोड़ में)	3903.72
	• ग्रामीण आवास	652.86
	• शहरी आवास /अन्य	367.71
	• रैन बसेरा	0.79
	• भूमि अधिग्रहण	0.00
	• स्वच्छता (आई.एल.सी.एवं आई.बी.एस.)	0.00
	• शहरी आधारभूत संरचना	2870.87
	• हडको निवास	11.49
7.	ऋण राशि अवमुक्त (राशि करोड़ में)	3447.71
	• आवासीय	971.66
	• शहरी आधारभूत संरचना	2469.83
	• हडको निवास	6.22
8.	कुल रिहायशी इकाईयों की संख्या	371373
	• ई.डब्लु.एस.	363998
	• एल.आई.जी.	2714
	• एम.आई.जी	1672
	• एच.आई.जी	2683
	• हडको निवास	306

हडको द्वारा वित्त पोषित झारखण्ड विधानसभा भवन

हडको द्वारा वित्त पोषित एस.डी.ओ. कार्यालय भवन, बुण्डू

हडको द्वारा वित्त पोषित समाहरणालय भवन, चाईबासा

हडको द्वारा वित्त पोषित समाहरणालय भवन, राँची

हडको द्वारा वित्त पोषित माननीय झारखण्ड उच्च न्यायालय

हडको
hudco
A NAVRATNA CPSE

हाउसिंग एण्ड अर्बन डेवलपमेन्ट कॉर्पोरेशन लिमिटेड

(भारत सरकार का नवरत्न उपक्रम)

क्षेत्रीय कार्यालय राँची

मैपल प्लाजा, छठा तल्ला, अरगोड़ा, राँची–834002

E-mail : ranchi@hudco.org